* श्रीराम *

राम-श्याम-भजन-संग्रह

प्रकाशक

भगवानी देवी मोदी

१९६३ संस्करण २००० } { मूल्य-२५ नये पैसे

राम-श्याम-भजन-संग्रह

(संशोधित एवं परिवर्द्धित)

संकलन-कर्त्ता

साधु श्रीरामनिवासजी लाडनूंवाले

प्रकाशक

भगवानीदेवी मोदी

डिबरूगढ़

आसाम

१९६३ संस्करण—२०००

मुद्रक—राममोहन शास्त्री
श्रीगोविन्द मुद्रणालय, बुलानाला, वाराणसी।

वक्तव्य

भक्त एवं साहित्य की भावयित्री प्रतिभा भारतीय जन जीवन का शताब्दियों से अविच्छिन्नरूपेण नेतृत्व करती आ रही है। इन स्थविरों की यह साधना भावयित्री ही नहीं, अपितु कारयित्री भी है, जिसके मध्य से भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और कर्म का अनुपम स्रोत तैल-धारावत् अब तक बहता चला आ रहा है। जब-जब इसका धारा सम्पात संत महात्माओं के मुखारविन्द से होता है, तब तब एक नयी प्रेरणा का सृजन होता है। यहाँ भक्ति, ज्ञान, वैराग्य संयुक्त पदों का यह संग्रह प्रस्तुत किया जाता है। पिछले कई वर्षों से सहस्त्रों सत्संग प्रेमी सज्जन सन्त-भक्तों द्वारा इन्हीं पदों को सुनते चले आ रहे हैं। अतः सत्संग-प्रेमियों की यह इच्छा हुई कि इन पदों का एक छोटा-सा संग्रह प्रकाशित किया जाय, जिसके द्वारा भक्ति-ज्ञान-वैराग्य-रूपी त्रिवेणी में अपने आपको अवगाहित कर वे शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति कर सकें। यह संग्रह जो आपके हाथ में प्रस्तुत है, उन्हीं सत्संग-प्रेमियों की सुरुचि एवं सद्भावना का परिणाम है।

इस संकलन को जनसाधारण तक सुलभ करने एवं प्रकाशित करने का श्रेय श्रीमती विद्यावती गुप्ता को है।

प्रस्तुत संग्रह में पदों एवं भजनों का संकलन किन्हीं विशिष्ट पाण्डुलिपियों पर आधारित न होकर श्रुत परम्परा प्राप्त ही है। कहीं कहीं कुछ संशोधन भी करा दिया गया है, एतदर्थ पाठभेद की संभावनाएँ हैं। मेरा विश्वास है कि पाठकगण, भवभयहारी भक्त-वत्सल भगवान की अनुकम्पा से इन सरल तथा गेय पदों में समाहित हो प्रभु-प्रेम का रसास्वादन कर लाभान्वित होंगे। सत्संग प्रेमियों के आग्रह से वर्तमान संस्करण के पुनः प्रकाशन का श्रेय श्रीमती भगवानी देवी मोदी को है।

मोदी निवास
डिबरूगढ़
आसाम

बजरंगलाल मोदी

अकारादिक अनुक्रमणिका

पद	भजन	पृष्ठ संख्या
	छ	
५१	छोटी छोटी गैयां	३२
४१	छोटो सो कन्हैयो	२७
	ज	
१०४	जगत में झूठी देखी प्रीत	६२
९४	जनम लिये वाने	५७
११५	जीव तू मत करना फिकरी	६७
१४१	जिसने राग द्वेष	८६
	झ	
५२	झूले में झूल लल्ला	३४
	ड	
९५	डरते रहे यह जिन्दगी	५८
	त	
१२३	तन धर सुखिया	७३
१५	तुम सुनों नाथ	८
२८	तुम्हें कृष्ण मुरली	१७
९९	तुंही तुंही याद	६०
१००	तूने हीरो सो जनम	६०
११	तूं भाई म्हारो	६
११६	तूं सारां से ही भूंडोरे	६८
८२	तूं सुमिरन करले	५६

॥ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

श्रीरामश्यामाभ्यांनमः

॥ श्रीराम श्याम भजन-संग्रह ॥

प्रार्थना

१

रे मन प्रति स्वांस पुकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।
तन नौका की पतवार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥१॥
जग में व्यापक आधार यही, जग में लेता अवतार यही।
है निराकार साकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥२॥
ध्रुव को ध्रुव-पद दातार यही, प्रह्लाद गले का हार यही।
नारद वीणा का तार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥३॥
सब सुकृतों का आधार यही, गंगा जमुना की धार यही।
श्री रामेश्वर हरिद्वार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥४॥
सज्जन का साहूकार यही, प्रेमीजन का व्यापार यही।
कुल 'बिन्दु' सुधा का सार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥५॥

२

भगवान् तुम्हारे मन्दिर में, मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूँ ॥टेर॥
प्रभु का चरणामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालो में, कुछ भीख माँगने आई हूँ ॥१॥

तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान् आपके चरणों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आई हूँ ॥२
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो रोकर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ाने आई हूँ ॥३

३

पतित-पावन तरण-तारन मेरी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है मुझे अपना बना लेना ॥टे
सुना है पार करते नाव तुम पतितों अनाथों की।
भँवर विच है मेरी नैय्या किनारे से लगा देना ॥१
बढ़ाया चीर द्रौपदि का ओ राखी लाज भक्तों की।
तुम्हारी ही दया है शूल को आसन बना देना ॥२
यह दुनियाँ पाप की बस्ती बिछा है जाल स्वारथ का।
छुड़ा के जाल से मुझको पास अपने बुला लेना ॥३

४

हे मेरे गुरुदेव करुणा-सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ॥टे
खा रहा गोते हूं मैं भवसिन्धु की मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न इस संसार में ॥१
मुझ में है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ॥२
पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही।

नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही ॥३

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ॥४॥
सब जगह मंजुल भटक कर अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना दोनों मरजी आपकी ॥५॥

५

प्रभु मेरी नाव उतारो पार ॥टेर॥
भवसागर संसार अगम है, तिरछी जाकी धार,
पार उतरना कठिन भयो है, सूझत वार न पार ॥१॥
लोभ मोह के बादल उमड़े, भयो महा धुन्धकार।
काम क्रोध पवन संग लीनो, बरसत है अहंकार ॥२॥
डोलत है यह नाव पुरानी, भवसागर मंझधार।
बिजुली चमके बादल गरजे, डरपत जिया हमार ॥३॥
दीन दयाल भरोसे तेरे, चढ़ा दियो परिवार।
इस बेड़े को पार उतारो, हे दयाल करतार ॥४॥
महामलो मैं कपटी कामी तुम हो बकशन हार।
रूपचन्द निज ठौर न न कोऊँ, तेरा नाम अधार ॥५॥

६

मो सम कौन कुटिल खल कामी ॥टेर॥
जिन तन दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमकहरामी ॥१॥
भरि भरि उदर विषय को धावत, जैसे सूकर ग्रामी ॥
हरिजन छांड़ि हरी बिमुखन की, निस-दिन करत गुलामी ॥२॥

पापी कौन बड़ो जग मोते, सब पतितन में नामी
सूर पतित को ठौर कहां है, तुम बिन श्रीपति स्वामी

७

प्रभु मोरे अवगुन चित ना धरो
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो
यह द्विविधा पारस नहीं जानत, कंचन करत खरो
एक नदिया एक नाल कहावत, मैलो नीर भरो
जब मिलिकै दोऊ एक वर्ण भये, सुरसरि नाम परो
एक जीव एक ब्रह्म कहावत, सूरस्याम झगरो
अबकी बेर मोंहि पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो

८

दीनबन्धु दीनानाथ मेरी सुध लीजिये।
सोने को सुनैयो नांही रूपे को रुपैयो नांही
कौड़ी पैसो पास नाहीं वनिज कासूं कीजिये,
खेती नांही बाड़ी नांही नौकरी व्योपार नांही
ऐसो कोऊ सेठ नांही जासे कछु लीजिये,
भाई नांही बन्धु नांही कुटुम कबीलो नांही
ऐसो कोऊ मित्र नांही जाके बल जीजिये
हाट औ हवेली नांही चौबारा महल नांही
ऐसी कोई ठौर नांही जामें वास कीजिये।

त है मलूक दास छोड दे बिराणी आस।
को भजन कर हरीमें समीजिये ॥ ५ ॥

९

हूँ मिलोगे दीनानाथ हमारे, कबहूँ मिलोगे राधेस्याम हमारे।
हूँमिलोगेराम कबहूँमिलोगेश्याम,कबहूँमिलोगे चित चोरहमारे ॥टेर॥
मिले प्रह्लाद भगत को, खम्भ फाड़ हिरणाकुस मारे।
मिले प्रभु भक्त विभीषण, लंका जारि निसाचर मारे ॥१॥
मिले प्रभु द्रुपद-सुता को, खैंचत चीर दुःसासन हारे।
मिले प्रभु जनक-सुताको, तोड़ा धनुष भूप सब हारे ॥२॥
मिले प्रभु मीरा बाई को, जहर को प्यालो अमृत कर डारे।
मिले प्रभु नरसी भगत को, भात भरन हरि आप पधारे ॥३॥
मिले प्रभु बलि राजा को, चार मास द्वारे पर ठाड़े।
ास को कबहूँ मिलोगे, टप-टप टपकत नयन हमारे ॥४॥

१०

मैं थारो जी थारो!
ो, बुरो, कुटिल अरु कामी, जो कुछ हूँ सो थारो ॥टेर॥
ड़्यो हूँ तो थारो बिगड्यो, थे ही मनै सुधारो।
्यो तो प्रभु सुधर्‌यो थारो, थाँ सूँ कदे न न्यारो ॥१॥
बुरो मैं भोत बुरो हूं, आखर टाबर थारो।

कुहाकर मैं रह जास्यूँ, नाँव बिगड़सी थारो ॥२॥

थारो हूँ थारो ही बाजूँ, रहस्यूँ थारो थारो!
आँगलियाँ नुहँ परे न होवे, या तो आप विचारो
मेरी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं कुछ म्हारो
मेरे बड़ो सोच यो लाग्यो, बिरद लाजसी थारो
जचै जिसतराँ करो नाथ! अब मारो, चाहे त्यारो
जाँघ उघाड्याँ लाज मरोगा, ऊँडी बात विचारो

११

आश्वासन

तूँ भाई म्हारो रे म्हारो।
तूँ म्हारो, तेरो सब म्हारो, जग सारो ही म्हारो।
मन में सदा दूसरो समझै, ऊपर से कहै थारो
म्हारो होता साँता भी सो रहे म्हारै सै न्यारो
एक बार जो कपट छोड़ कर कहै 'नाथ मैं थारो'
सो म्हारे सगलां पुतरां में अधिक लाडलो म्हारो
सदा पातकी, सदा कुकरमी, विषयाँ में मतवारो
'मैं थारो' यूँ सांचै मनसै, कहताँ ही हो म्हारो
झटपट पुण्यवान सो होवै, पापाँ सैं छुटकारो
म्हारो म्हारी गोद विराजै, कदे न म्हाँसूँ न्यारो
तन मन वाणी सैं जो म्हारो, सो निश्चै ही म्हारो
कदे न लाज्यो, कदे न लाजै, नाँव-बिड़द-जस म्हारो

१२

प्रार्थना

ऊधो मधुपुर का वासी,
म्हारो बिछड्यो स्याम मिलाय, विरह की काट कठण फांसी ॥टेर॥
स्याम बिनु चैन नहीं आवे,
म्हारो जब से बिछड्यो स्याम, हीवड़ो उभल्यो ही आवे ॥१॥
छाय रही व्याकुलता भारी,
म्हारे स्याम विरह में आज नैन से रह्यो नीर जारी ॥२॥
स्याम बिनु व्रज सूनो लागै,
सूनी कुंज, तीर जमुना को, सब सूनो लागै ॥३॥
गोठ वन स्याम विना सूनो,
म्हारे एक एक पल जुग सम बीते, बिरह बढ़े दूनो ॥४॥
ऊधौ ! अरज सुणो म्हारी,
थारो गुण नहीं भूलाँ कदे मिलाद्यो मोहन बनवारी ॥५॥

१३

नाथ ! थारे सरणे आयोजी।
जचे जिसतरीं, खेल खिलाओ, थे मन-चायोजी ॥टेर॥
बोझो सभी उतर्‌यो मन को, दुख बिनसायोजी ॥
चिन्ता मिटी, बड़े चरणाँ को सहारो पायोजी ॥१॥
सोच फिकर अब सारो थारे ऊपर आयोजी ॥
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अन्तर हरखायोजी ॥२॥

जस अपजस सब थारो, म तो दास कुहायोजी ॥
मन भँवरो थारे चरण कमल में जा लिपटायोजी ॥३॥

१४

स्याम अब मत तरसाओजी।
मनमोहन नन्दलाल दयाकर दरस दिखाओजी ॥टेर॥
व्याकुल आज आपकी राधा, माधव आओजी ॥
तव दरसन लगि तृषित द्रगन को सुधा पियाओजी ॥१॥
तुम बिन प्राण रहैं अब नाहीं, धाय बचाओजी ॥
प्रानाधार प्रान चह निकसत, वेग सिधाओजी ॥२॥
राधा कहत गये, राधा के पुनि पछिताओजी ॥
राधा बिना स्याम नहिं "राधाकृष्ण" कहाओजी ॥३॥

१५

तुम सुनो नाथ मोरी अरजी।
भव सागर से पार उतारो सुनोजी स्यामसुन्दरजी ॥टेर॥
दुख विपता में बही जातहूँ काढ़ो हाथ पकड़जी ॥१॥
मात पिता और कुटुम्ब-कबीलो सब मतलब के गरजी ॥
यो संसार सगो नहीं कोई, साँच सगो गिरधर जी ॥२॥
और सखिन की सेज सलोनी मैं मदभागण सरजी ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर तारो तो थारी मरजी ॥३॥

१६

अब तो नाथ दया करो मेरे समरथ दाता।
जिव तड़फे दरसण बिना किन सों कहूँ बांता ॥टेर॥
आठ पहर नहीं बिसरुँ नित डगर निहारों।
हों तेरे नाम के ऊपरे मेरा तन मन वारों ॥१॥
मेरे घट में तड़फना जैसे घन विन मोरा।
लगत पियारा मीत सों जैसे चन्द चकोरा ॥२॥
बरखा बिन दादुर दुखी निरधन धन काजा।
जन की या गति जानि के बुझावो दाझा ॥३॥
करणी दिसा न देखियो पूरण अविनासी।
सरणे की प्रति पालियो, नहीं तो विड़द लज्जासी ॥४॥
धीरज दे अपनो करो, विरहा विसवासो।
'कनीराम' कूँ दरस दो भेटो सब साँसो ॥५॥

१७

हेलो म्हारो सुणज्यो जो महाराज, गरुड़पति गोकुलवाला जी ॥टेर॥
प्रथम पूतना कंस पठाई, कुच संग विष लिपटायो जी।
पय संग प्राण खैंच लिए हरि ने, तन विस्तार्यो जी ॥१॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, लड़त लड़त गज हार्यो जी।
गज के काज पयादे धाये, गरुड़ विसार्यो जी ॥२॥
खम्भ फाड़ नरसिंह रूप धर, 'हिरणाकुंश' को मार्यो जी।
जन अपनो प्रह्लाद बचायो, ध्रुवजी को त्यार्यो जी ॥३॥

द्रुपद सुता में भीड़ पड़ी जब, कृष्ण ही कृष्ण पुकारी जी।
खैंचत चीर दुसासन हार्यो जी, पार न पायो जी ॥४॥
मैं मतिमन्द कछु नहीं लायक, कौन भाँति जश गायो जी।
'रतन' कहे कर जोर नाथ थारे, सरणे आयो जी ॥५॥

१८

भूल बिसर मत जाना कन्हैया, मेरी ओर निभाना जी ॥टे०॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल झलकत काना जी॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, मोहन बंसी बजाना जी ॥१॥
हमरी तुमसे लगन लगी है, नित प्रति आना जाना जी॥
घट घट वासी अन्तरजामी, प्रेम का पन्थ निभाना जी ॥२॥
जो मोहन मेरो नाम न जानो, मेरो नाम दिवाना जी॥
हमरे आँगन तुलसी का बिड़ला, जिसके हरी हरी पाना जी ॥३॥
जो काना मेरो गाँव न जानो, मेरो गाँव बरसाना जी॥
सूरज सामी पोल हमारी, चन्दन चोक निसाना जी ॥४॥
या तो ठाकुर दरसन दीजो, नहीं तो लीजो प्राना जी॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरणों में लिपटाना जी ॥५॥

१९

सांवरिया अरज मीरा की सुणरे।
मैं नुगरी म्हारो सुगरो सांवरियो, ओगुण गारी रा कुंणरे ॥टे०॥
राणा विष का प्याला भेज्यां, नित चरणामृत को पसारे।

तारण वारो म्हारो स्याम धणी है, मारण वारो कुणरे ॥[illegible]

निस दिन बैठी पंथ निहारुं, व्याकुल भयो म्हारो मन रे।
म्हारे तो दिल में ऐसी भावे, जाय बंसू माधोवन रे ॥२॥
निस दिन मोहे विरह सतावे, लकड़ी में लाग्यो घुण रे।
जैसे जल बिन मछली तड़फे, वैसे ही म्हारो मन रे ॥३॥
राम सभा म्हारो स्याम विराजे, जां पे वारुं तन मन रे।
मीरां ने प्रभु गिरधर मिलिया, ओरां ने ध्यावे कुणरे ॥४॥

नरसीजी को भजन

२०

एजी म्हांरा नटवर नागरिया, भगतां रे क्यूं नहिं आयो रे।
भगतां रे क्यूं नहिं आयो रे साधां क्यूँ नहिं आयो रे ॥टेर॥
धनो भगत कांई भगत पूरब लो, जिणरो खेत निपंजायो रे।
बीज लेर साधां ने बाँट्यो, विना बीज उपजायो रे ॥१॥
सैन भगत कांई सुसरो लागे, जिणरो कारज सारथो रे।
वगल रछांनी नाई बण गयो, नृप को शीश संवारथो रे ॥२॥
नामदेव कांई नानो लागे, जिणरो छप्पर छायो रे।
मार मंडासो छावन लाग्यो, लिछमी बंध खिंचायो रे ॥३॥
फरसो कांई थारे फूंफो लागे, जिणरो पैड़ों पूठ्यो रे।
विना बुलायो आप ही आयो, राल्यूं लकड़ो कूटथो रे ॥४॥
कबीर कांई थारो काको लागे, ज्यां घर बालद लायो रे।
खांड खोपरा गिरी छुहारा, आप लदावण आयो रे ॥५॥

करमा कांइ थारी काकी लागे, जिणरो खीचड़ खायो रे।
धाबलिये रो पड़दो करती, रुच-रुच भोग लगायो रे ॥६॥
मीरा कांइ थारी मासी लागे, जिणरो विषड़ो जारयो रे।
राणे विषरा प्याला भेज्या, विष अमृत कर डारयो रे ॥७॥
भिलनी कांइ थारी भूवा लागे, जिणरी जूठन खावे रे।
ऊँच-नीच की कांण मानें, रुच-रुच भोग लगावे रे ॥८॥
बाल भोग को भूखो बाला, खोस खा गयो बोर रे।
नानी बाई रो माहेरो भरतां, तन्ने आवे जोर रे ॥९॥
जीमणरो जिमणारयो बालो, फिर-फिर सारया काम रे।
नानी बाईरो माहेरो भरतां, घर का लागे दाम रे ॥१०॥
कह नरसीलो सुण साँवलिया, आणों है तो आव रे।
ब्याही सगाँ में भूंडा लागां, यू कांइ लाज गमावे रे ॥११॥

२१

भुजी राखो लाज हमारी।
म से क्या छिपी करुणा निधि, गोवर्धन गिरधारी रे ॥टेर॥
हा अपराधी कुटिल अरु कामी, कई-कई पाप किया मैं नामी।
र लागे, मोहे श्रीपति स्वामी, जम के हाथ मति डारी रे ॥१॥
रा मेरा कछु दिन राती, यो तम चाल्यो ना मेरे साथी।
म बिन मेरा कौन संगाती, तुंही तुंही टेर पुकारी रे ॥२॥
रि हरि नाम कबहूं नही लीनो, कर उठाय कछु दान न दीनो।
ा रतन को सेवा कीनो, अब गति कैसी हमारी रे ॥३॥

तूंही राम, तूंही रुपय्या, तूंही मात-पिता मेरो भैया।
तुम बिन पार करें कुण नैय्या, भव सागर अति भारी रे ॥४॥
ढूंढ़त ढूंढ़त घर में पायो, सतगुरु तेरो नाम बतायो।
मैं जाचक जाचण ने आयो, सेवा दास बिचारी रे ॥५॥

२२

करुणानिधि अरज हमारी, राम सुन लीज्यो हमार ॥टेर॥
जनम-मरण को पार न पायो, यह दुख बहुत बुरोरी।
हाथ जोड़ बिनती करूँ माधव, संकट काटो भारी।
राम मैं हूं शरण तुम्हारी ॥१॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण तारे, तारी है गोतम नारी।
अजामील जैसे अधम उधारे, गनिका सी तुम तारी।
राम क्यों है ढील हमारी ॥२॥
धन्नादास बाजिंद कबीरा, नामदेव लियो उबारी।
अनंत कोटि जन तार दियें हैं, क्या तकसीर हमारी।
राम भूलो मति म्हांरी ॥३॥
रोम-रोम गुन्हेहार भर्‌यो मैं, खूनी बहुत बिकारी।
हमसे अधम पार करो प्रभुजी, छीतमदास बिचारी।
राम मैं हूँ रंज तुम्हारी ॥४॥

२३

तोसैं अर्ज करूँ साँवरिया, मो से मन नहीं जीत्यो जाय ॥टेर॥
मन मेरा यह चंचल भारीं, छिन छिन लेवे राड़ उधारी।
तोड़ फेंकदे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय ॥१॥

मन मेरा यह चंचल घोड़ा, सत्संग का माने नहीं कोड़ा।
ग्यान ध्यान का लंगर तोड़ा, पल पल में हिन हिनाय ॥२॥
मन हाथी नहीं काबू मेरे, नहा धोय सिर धूर बखेरे।
महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहीं भय खाय ॥३॥
कैसे राखूँ मन को बस में, मन कर रक्खा मुझको बस में।
तुलसी का मन विषय कुरस में, पल पल में ललचाय ॥४॥

२४

दरस म्हांने वेगा दीज्यो जी !
ओ जी ! अन्तरजामी ओ राम ! खबर म्हारी वेगा लीज्यो जी ॥टेर॥
आप बिना मोहे कल ना पड़त है जी !
ओ जी ! तड़फत हूं दिनरैन नैन में नीर ढले छै जी ॥१॥
गुण तो प्रभुजी मों मे एक नहीं छै जी !
ओ जी ! अवगुण भरे हैं अनेक, औगुण म्हांरा साफ कीज्यो जी ॥२॥
भगत वछल प्रभु बिड़द कहायो जी !
ओ जी ! भगतन के प्रतिपाल, सहाय आज म्हांरी बेग करोज्यो जी ॥३॥
दासी मीरां की बीनती छै जी !
ओ जी ! आदि अंत की वो लाज, आज म्हांरी राख लीज्योजी ॥४॥

२५

अरज म्हांरी जाय कही ज्यो जी।
ऊधोजी ! मोहन ने समझाय, वृन्दांवन बेगा ल्याज्यो जी ॥टेर॥
वृन्दावन फीको लागे जी !
ऊधोजी ! नैनां देखी नहीं जाय, आग उर भीतर जागे जी ॥१॥

यसोदा अति अकुलावे जी !
ऊधोजी ! नन्दजी करत विलाप, मोहन कब दर्श दिखावे जी ॥२॥
राधा थांने याद करे छै जी !
ऊधोजी ! छिन-छिन करत विलाप, नैणां में नीर बहै छै जी ॥३॥
ऐसी हम नांहि जानी जी !
ऊधोजी ! अध बिच गये छिटकाय, पीड़ म्हारी नांही पिछानीजी ॥४॥
दासी म्हारी बैरण भई छै जी !
ऊधोजी ! मोहन ने लियो मोय-जोय चित्त रोय रह्यो छै जी ॥५॥
श्याम बिना सेज अलूंणी जी !
ऊधोजी ! सिरपर डारूँगी खाख, जाय बन तापूँ धूणी जी ॥६॥
एक बार दर्स दिखाओ जी !
ऊधोजी ! थांरा गुंण भूलू मैं नांहि, सुरत झटपट दिखलावो जी ॥७॥

२६

ओड़ो अरोगो जी मदनगोपाल, करमां बाई रो खींचड़लो ॥टेर॥
थांरो प्रेम पुजारी प्रभुजी ! गयो तीरथां न्हांण।
जांतो जांतो देगयो म्हांने, सेवा री भोलाण-
जद आई थांरे मन्दिरिये में चाल ॥१॥
मैं हूँ दीन अनाथिणी जो, नहिं जाणुं पूजा फन्द।
नयो नवादो झेलियो ओ, धन्यो गोकुलचन्द-
तूं ही रखवारो भक्तां री लाजी आल ॥२॥

नहिं कर जाणूं षटरस भोजन, खाटा सूं अनुराग।
रूखो सूधो राम खीचड़ो, गुंवारफली रो साग-
मीठो दही ल्याई बाटके में घाल ॥३॥
रूस्या क्यूं बैठा राधा, रुकमणजी रा स्याम।
भूखां मरतां बणै न सोदो, मास दिवस रो काम-
थांरा भूखांरा चिप जासी वाला गाल ॥४॥
समझ गई सरमा गये ठाकुर, लखि मोहि नुवाद।
धावलिये रो पड़दो कीनो, प्रगट लियो परसाद-
हरख्यो हिवड़ा में मन लहरी मोतीलाल ॥५॥

२७

मैं तो सरवर पाणीडै नै चाली हे माय, नरसी महता की बालकी।
जल भरूँ क डूब मर जाऊँ हे माय, नरसी महता की बालकी ॥टेर॥
म्हारो सुसरो जी घणों बखतावर, मैं तो बाबल निर्धन पायो हे माय ॥१॥
देराणी जेठाणी म्हांने मैणाही देवे, मने सासु नणद सतावे हे माय ॥२॥
पाड़ोसन पेमी लड़े नित नेमी, वा तो बलती में पूलो न्हांखे हे माय ॥३॥
देवरियो दूतो फिरे निपूतो, म्हारे सुसराजी ने जाय सिखावे हे माय ॥४॥
सुसरोजी सपूता एक न माने, देवरियो बिलख पाछो आवे हे माय ॥५॥
म्हारे तो नहीं छै जामणजायो बीरो, कुण मनै चीर ओढावे हे माय ॥६॥
म्हारे नहीं छै जनम की माई, मनै हिवड़े कूंण लगावे हे माय ॥७॥
म्हारे तो बाबोजी असल निर्वाणी, जांरे पल्ले पईसो नाहीं है माय ॥८॥
म्हारे तो नहीं है मामो मौसालो, म्हारो सांवल काज सुधारे हे माय ॥९॥
कै तो सांवलियो काज सुधारे, नहीं तो परत न पाछी जाऊँ हे माय ॥१०॥

२८

तुम्हें कृष्ण मुरली बजानी पड़ेगी।
हमें अपनी बीती सुनानी पड़ेगी ॥टेर॥
भँवर में फँसी बोझ पापों का भारी।
मेरी पार नैय्या लगानी पड़ेगी ॥२॥
मैं करुणा-रुदन जब करूँगा तो तुमको।
प्रगट होके झाँकी दिखानी पड़ेगी ॥३॥
मैं आशा लगाये खड़ा द्वार पर हूँ।
प्रभु लाज मेरी बचानी पड़ेगी ॥४॥
रखी द्रोपदी की प्रभु लाज तुमने।
पतित की भी बिगड़ी बनानी पड़ेगी ॥५॥

२९

मैं आशिक तेरे नाम का, बिन मिले सबर नहीं आवे ॥टेर॥
हे प्रभू तेरा नाम जबर है, ऐसी हम पे क्या कड़ी नजर है।
हुकुम होवे फिर नाहीं उजर है, चाल बसूं तेरे धाम में-
क्यों जगह जगह भटकावे ॥१॥
आशिक से क्या करते ओला कभी तो करो महर का झोला।
तेरे कारण बने बन डोला जंगल शहर और गाँव में-
नहीं पता आप का पावे ॥२॥
आशिक निबल माशूक जबर है मेरे हाल की तुझे खबर है।
बिन देखे अब नहीं सबर है मेरी अर्जी है दीन दयाल से-
देखूं कब लग नजर छुपावे ॥३॥

दारुण विपता जग में भरते आशिक लोग कबहुँ नहीं डरते।
तुम बड़े कठोर दया नहीं करते शंकर दास गुलाम पे-
मिल मत प्यारे तरसावे ॥४॥

३०

मेरी पड़ी भँवर बिच नाव नाथ जाहि तारदे ॥टेर
नहिं आवे नजर किनारे, हम इसी से हिम्मत हारे।
दुख दे तीनू ताप हमारे कृपा कर टार दे ॥१॥
मेरे पांचू वैरी संग में, नाहिं बाहिर भीतर इस तन में।
इनोने किया बहुत ही तंग में, नाथ जाहि मारदें ॥२॥
यह मनुष्य देह दुसवार, मौका मिलै न बारम्बार।
ईश्वर तूं है सर्वाधार, जीवन मेरा सारदे ॥३॥
जो तेरे दरपे आवे, वे मनवांछित फल पावे।
पद तेजसिंह कथ गावे, हमें भी फल चारदे ॥४॥

३१

लगाई लगाई लगाई कहाँ देर—
मैं हारी हें सांवरिया थांने टेर टेर ॥टेर॥
दुष्टनकी यह सभा जुड़ी है, कोई नहीं कहता बात खरी है।
सबन के मुख मौनधरी है।
नगन करन को चाहत मुझको, छाय रह्यो अंधेर ॥१॥
पाँच पति की मैं हूं नारी पाचां के पति तुम गिरधारी।
उनं मुझको जूआ, विच हारी—
दुख सागर में डूब रही हूं, सुनो हमारी टेर ॥२॥

दुशासन मन भई अनीति, केश पकड़ कर करत फजीति।
और मुझको जूआ विच जीति।
कपटी कुटिल कठोर कलंकी, लिवी सभा में घेर ॥३॥
साड़ी उतारन चहत हमारी, दीना नाथ लाज रखो म्हांरी।
वेग पधारो कुंज विहारी।
दीनानाथ दया के सागर, कीजे अब नहीं देर ॥४॥
द्रौपदि टेर सुनी यदुराई, चीर बढ़ा लीला दिखलाई।
दुशासन की बुद्धि भरमाई—
हार भई वैरी की सभा में, करी कृष्ण जी म्हेर।
द्रोपदि की उतरी नहीं सारी, चीर बढा लीला विस्तारी ॥५॥
खैंचत खैंचत थक्यो अनारी—
कह गिरधारी दास चीर का, लग्या ढेर का ढेर ॥६॥

३२

इतना तो करना स्वामी, तब प्राण तन से निकले।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥टेर॥
श्री गंगाजी का तट हो, या यमुनाजी का बट हो।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥१॥
श्री वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो।
विष्णु-चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ॥२॥
मेरा साँवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो।

तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥३॥

सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले॥

केशर-तिलक हो आला, मुख-चन्द्र-सा उजाला।
डालूं गले में माला, जब प्राण तन से निकले॥

कानों में जड़ाऊ बाली, लट की लटें हों काली।
देखूं छटा निराली, जब प्राण तन से निकले॥

पीताम्बरी कसी हो, होटों पै कुछ हँसी हो।
छबि यही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले॥

पचरंग काछनी हो, पट पीत से तनी हो।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले॥

जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे।
यम दरस ना दिखावे; जब प्राण तन से निकले॥

मेरे प्राण निकले सुख से, तेरा नाम आवै मुख से।
बच जाऊँ घोर दुख से, जब प्राण तन से निकले॥

उस वक्त जल्दी आना, मुझको न भूल जाना।
नूपुर की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले॥

सुधि होवे नाहिं तन की, तैयारी हो गमन की।
लकड़ी हो वृन्दाबन की, जब प्राण तन से निकले॥

यह नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
यह दास की गरज है, तब प्राण तन से निकले॥

३३

आश्वासन

रामजी रो राख भरोसो भाई।
जो तूं राखे राम भरोसो, कमीयन राखे काई ॥टेर॥
अजगर उडै न धरणी पर चाले, चोंच मोड़ नहीं खाई।
ताको भरण करै भूधरियो, पल भर नहीं विसराई ॥१॥
कीड़ी को कण देवे रामजी, हस्ती मण भर खाई।
अनल पंख आकास उड़त है, वाकूं चूण चुगाई ॥२॥
रामजनां को राम पूरवे, वेद पुराणां गाई।
हरिजन होय जगत ने जाचै, लाजै त्रिभुवन राई ॥३॥
उनके द्वार कभी नहीं जाचूं, या मेरे मन भाई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, रामजी ने लाज वड़ाई ॥४॥

३४

आय पहुँचे भगवान भगत की टेर सुनी ॥टेर॥
सतयुग में प्रहलाद भक्त को, राक्षस लियो दबाय।
खम्भ फाड़ हिरनाकुस मारा, भक्त प्रहलाद बचाय ॥१॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, गज को लियो हराय।
छोड़ गरुड़ पैदल उठ धाये, गज को लियो छुड़ाय ॥२॥
द्रुपद-सुता में भीड़ पड़ी जब, सुमर्यो बारं बार।

खैंचत चीर पार नहीं पायो, गयो दुःसासन हार ॥३॥

नरसी गयो भात भरने को; मृदंग ताल बजाय।
भात भरयो सांवल साह आकर, सबको मन हरसाय॥१
काम, क्रोध, मद लोभ मोह सब, मुझको रहे सताय।
स्याम कहे निज दास जान कर, चरणों में लेवो लगाय॥२

३५

मन तूं क्यों पछतावे रे।
सिर पर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावे रे॥टेर॥
निज करनी को याद करूँ जब जिव घबरावे रे।
प्रभु की महिमा सुण सुण मन में धीरज आवे रे॥१॥
शरणागत की लाज तो सब ही ने आवे रे।
तीन लोक को नाथ लाज हरि नांहि गमावे रे॥२॥
जो कोई अनन्य मन से हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को योग क्षेम हरि आप निभावे रे॥३॥
जो मेरा अपराध गिणों तो अंत न आवे रे।
ऐसे दीन दयाल हरी चित एक न लावे रे॥४॥
पतित उधारन बिड़द प्रभु को वेद बतावे रे।
मो गरीब के काज बिड़द हरि नांहि लजावे रे॥५॥
महिमा अपरंपार तो सुर नर मुनि गावे रे।
ऐसो नन्दकिशोर भक्त की ओड़ निभावें रे॥६॥
वो हैं रमानिवास भक्त की त्रास मिटावे रे।
तू मत होय उदास कृष्ण को दास कहावे रे॥७॥

३६

भजन श्रीरामलीला

रघुपति जन मन हारी, सीताराम सीताराम
दशरथ अजिर बिहारी, सीताराम सीताराम ॥१॥

श्याम शरीर मुकुट सिर सोहै, पीत वसन लखि मुनि मन मोहे
जय जय अवध बिहारी, सीताराम सीताराम ॥२॥

भूमिभार के टारन हारे, कौशल्या के परम दुलारे
धनुष बाण करधारी, सीताराम सीताराम ॥३॥

विश्वामित्र यज्ञ रखवारे, गौतम तिय के तारन हारे
निजजन के दुखहारी, सीताराम सीताराम ॥४॥

तोड़्यो धनुष शम्भू को भारी, सिय जयमाल राम गर डारी
सुरनर मुनि हित कारी, सीताराम सीताराम ॥५॥

केवट से निज चरण धुवायो, भक्त गीध निज धाम पठायो
करुणा सिन्धु खरारी, सीताराम सीताराम ॥६॥

बेर भीलनी के अति भाये, परम प्रेम से प्रभु ने पाये
ऐसे प्रेम पुजारी, सीताराम सीताराम ॥७॥

दीन सुकंठ मित्र प्रभु कीन्हा, वाली मारि धाम निज दीन्हा
भक्तन के भय हारी, सीताराम सीताराम ॥८॥

भक्त विभीषण शरणे आयो, रावण वध लंकेश बनायो
दीन बन्धु असुरारी, सीताराम सीताराम ॥९॥

राज सिंहासन शोभित कीन्हो, पुरवासिन को अति सुख दीन्हो
जय साकेत बिहारी, सीताराम सीताराम ॥१०॥
अब करुणामय करुणा कीजे, दीन जनन को यह वर दीजे
पावे भक्ति तुम्हारी, सीताराम सीताराम ॥११॥
जोजन प्रभु के यह गुण गावे, उनके मानस में हरि आवे
होत हृदय सुख भारी, सीताराम सीताराम ॥१२॥

३७

यो धनुष बड़ो विकराल रघुवर छोटो सो ॥टेर॥
बड़ो कठिन पण पिता कियो, कोइ रंच न कियो विचार ॥१॥
कमल जिसो तन राम रो, यो धनुष बजर सो जान ॥२॥
जनुष चढो चाहे मति चढो, म्हांरो राम भँवर भरतार ॥३॥
छोटो छोटो मति कहो, यो पूरण ब्रह्म परेस ॥४॥
सूरज छोटो सो लगे, कोई जग में करै प्रकास ॥५॥
रघुवर चाप चढावसी, कोइ इन में फेर न सार ॥६॥

३८

साँवरी सूरत म्हारे मन में बसी ! ॥टेर॥
छोटा-छोटा चरण-कमल दल-लोचन ।
ए जो वे तो धनुष उठावण कमर कसी ॥१॥
तोड्यो धनुष जनक यज्ञ पूर्यो ।
ए जी सब भूपन के मन संक धसी ॥२॥

कर वर माला लिये हैं जानकी ।
एजी वा तो रघुवर ने पहिराय हंसी ॥३॥
तुलसीदास आस रघुवर की ।
एजी बाँके चरण कमल में सूरत बसी ॥४॥

३९

ान में देख्या दोय बनवासी, वाँरो मुख देख्यां दुख जासी ए मांय ॥टेर॥
ोजपत्र के वस्तर पहिरे, वे तो अपने नगर होय आसी ए मांय ॥
ैणा से सखि निरखण लायक, वाने कौन किया बनवासी ए मांय ॥
धेनवांरी मात-पिता वांरा धिन है, वे तो हिवड़ोफाट मर जासी ए मांय ॥
ुलसीदास आस रघुवर की, वांरे चरण-कमल चित लासी ए मांय ॥

४०

कीर्तन श्रीकृष्णलीला

केशव कलि- मलहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।
माधव मदन मुरारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥ १ ॥

सुन्दर कुण्डल नयन विशाला, गल सोहे बैजन्ती माला
या छवि की बलिहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥ २ ॥

पुतना सकट तृणासुर तार्यो, गर्ग मुनी ने नाम सुधार्यो
रामकृष्ण शुभकारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥ ३ ॥

कबहुँक लूट-लूट दधि खायो, ऊखल में निज को बँधवायो
अमलार्जुन को तारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥ ४ ॥

चुरा-चुराकर माखन खायो, ब्रज वनितन पै नाम धरायो
माखन चोर मुरारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥५

वत्स अघासुर को प्रभु मार्‍यो, विधि को मोह पासमें डार्‍यो
महिमा अद्भुत न्यारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥६

ग्वाल-बाल संग धेनु चराई, वन-वन भ्रमत फिरे यदुराई
कांधे कामर कारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥७

खेलत गेंद गिरी जमुना में, चढ़ कदम्ब कूदे प्रभु दह में
नाग नाथ लियो कारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥८

धेनुक वधि काली मद नास्यो, गो गोपाल दवानल फाँस्यो
मारी प्रलम्ब उबारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥९

एक दिन मान इन्द्रको मार्‍यो, नख ऊपर गोबर्धन धार्‍यो
नाम पर्‍यो गिरधारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१०

करुणा कर द्रौपदी पुकारी, पट में प्रगट भये बनवारी
खच दुशासन हारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥११

दुर्योधन को भोग न पायो, रूखो साग विदुर घर खायो
ऐसे प्रेम पुजारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१२

अर्जुन के रथ हांकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे
चक्र सुदर्शन धारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१३

ग्राह ग्रसित गजराज पुकार्‍यो, छाड़ि तुरत खगराज सिधार्‍यो
ऐसे करुणाधारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१४

तुम बिन और कहाँ मैं जाऊँ, औरन ते कहते सकुचाऊँ
सुनो दीन दुखहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१५॥
भक्त भक्त सबही तुम तारे, भक्ति हीन हम ठाढ़े द्वारे
लीज्यो खबर हमारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ॥१६॥

१४

छोटो सो कन्हैयो काली-दह पर खेलन आयोरी ॥टेर॥
काहे की पट गेंद बनाई, काहे का डण्डा लायोरी ॥१॥
फूलन की पट गेंद बनाई, चन्दन डण्डा लायोरी ॥२॥
देत ही ठोकर गिरि जमुना में गेन्द की साथे धायोरी ॥३॥
नाग नाथ कर बाहर आयो फण फण निरत करायोरी ॥४॥
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखे चरण कमल में आयोरी ॥५॥

४२

मोकोहूं झूठहुँ दोष लगावहिं।
मैया इन्हहिं बानि पर गृह की नाना ज़ुगुति बनावहिं ॥टेर॥
इन्ह के लिये खेलिबो छोड्यो ताऊ न उबरन पावहिं ॥
भाजन फोरि बोरि कर गोरस देन उरहनो आंवहि ॥१॥
कबहुँक बाल रोवाइ पानि गहि मिस कर उठी उठी धावहि ॥
करहिं आपु सिर धरहिं आन के वचन विरंच हरावहिं ॥२॥
मेरी टेव बूझ हलधर को संतन संग खेलावहि ॥
जे अन्याऊ करहिं कौतुकी ते सिसु मोहि न भावहिं ॥३॥
सुत्ति सुनि बचन चातुरी ग्वालिनि हंसि हंसि वदन दुरावहिं ॥

बाल गोपाल केलि कल कीरति तुलसीदास मुनि गावहि ॥४॥

४३

नाचे नन्दलाल नचावे हरि की मैया ॥टेर॥

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धरो री कन्हैया ॥१॥
रुनुक-झुनुक पग नुपूर बाजे, ठुमुक-ठुमुक पग धरो री कन्हैया ॥२॥
धोती न बाँधे जामो न पहिरे, पीताम्बर का बड़ो री पहरैया ॥३॥
टोपी न ओढ़े लाला फेटों न बांधे, मोर-मुकुट को बड़ो री ओढ़ैया ॥४॥
शाल न ओढ़े दुशाला न ओढ़े, काली कमरियाँ को बड़ो री ओढ़ैया ॥५॥
दूध न भावे याने दही न भावे, माखन-मिसरी को बड़ो री खवैया ॥६॥
खेल न खेले खिलोना न खेले, चन्द खिलोना को बड़ो री खेलैया ॥७॥
सीटो न भावै याहे पीपी न भावै हरिसी बांसुरी को बड़ो री बजैया ॥८॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि, हँस-हँस कंएठ लगावे हरिकी मैया ॥९॥

४४

तेरे लाला ने ब्रज रज खाई, यसोदा सुन माई ॥टेर॥
अदभुत खेल सखन संग खेलो, छोटो सो माटी को ढेलो।
तुरत श्याम ने मुख में मेलो, या ने गटक गटक गटकाई ॥१॥
दूध दही को कबहुँ न नाटी, क्यों लाला तैंने खाई माटी।
यसोदा समझा रही ले सांटी, याने नेक दया नहीं आई ॥२॥
मुख के मांहि आंगुली मेली, निकल पड़ी माटी की ढेली।
भीर भई सखियन की भेली, या ने देखे लोग लुगाई ॥३॥
मोहन को मुखड़ो फरदायो, तीन लोक [illegible] दरशायो।
तब विश्वास यसोदहि आयो, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई ॥४॥

ऐसो रस नहीं है माखन में, नहीं मिसरी मेवा दाखन में।
जो रस है ब्रज रज चाखन में, याने मुक्ति की मुक्ति कराई ॥५॥
या रज को सुर नर मुनि तरसै, बड़भागी जन नित उठ परसे।
जाकी लगन लगी रहे हरि से, यह तो घासीराम कथ गाइ ॥६॥

४५

मारे मति मैय्या बचन भरवाय ले।
बचन भरवाय ले सौगन्ध कढवायं ले ॥टेर॥
गंगा की खवायले चाहे जमुना की खवायले।
चीर सागर में मैय्या ठाड़ो करवाय ले ॥१॥
गैय्यन की खवाय ले चाहे बछड़न की खवाय ले।
नन्द बाबा के आगे ठाड़ो करवाय ले ॥२॥
गोपिन की खवाय ले चाहे ग्वालन की खवाय ले।
दाऊ भैया के माथे हाथ धरवाय ले ॥३॥

४६

यशोदा मैया खोल किवरिया लालो आयो धेनु चराय।
आयो धेनु चराय साँवरो, आयो गाय चराय ॥१॥
गऊ गोप गोपाल दाऊ सँग, बंशी मधुर बजाय।
सुन गोपी जन मन हरषित भइ, चढ़ी अटारिन जाय ॥२॥
यशोदा मैया करत आरती, फूली नाहिं समाय।
हँस-हँस लेत बलैया मैया, बार-बार बलि जाय ॥३॥
दूध दुहाय कहै मन मोहन, माखन दे री माय।
सह लौनी तोहि प्रात: मिलैगी, पीवो दूध अघाय ॥४॥

खिड़फ खोल गैया ढ़िर दीनी, बछड़ा रहे चुंघाय।
काली काजर धौलो धूमर, को रह्यो दूध दुहाय॥
इतने में एक सखी साँवरी, टेरत पहुँची जाय।
तो बिन मोकू दूध न देवे, गैया रही रंभाय॥
सखी साँवरी की लाला ने, जाय दुहाइ गाय।
आधौ दूध दौहनी में डारो, आधो गयो चढ़ाय॥
सखी साँवरी कहने लागी, मधुरे मन मुसकाय।
सूर श्याम यसोदा के लाला नित्य दुहावो आय॥

४७

ग्वालिन मत पकड़ मोरी बहियाँ मोरी दूखे नरम कलैयाँ॥
तेरो मैं माखन नहीं खायो, अपने घर के धोखे में आयो।
मटकी ते नहीं हाथ लगायो, हाथ छोड़ दे हा हा खाऊँ—
तेरी लेऊँ बलैयाँ॥
खोल किवड़ियाँ तू गई पानी, भूल करी तू अब पछतानी।
मो संग कर रहीं ऐंचा तानी, झूठो नाम लागयो तैंने मेरो—
घर में घुसी बिलैयाँ॥
तोकूँ नेक दया नहीं आवे, मो सूधे कूँ दोष लगावे।
घर में बुलाके चोर बनावे, वाट देख रहे हैं री सखा सब—
दूर निकसि गईं गैयाँ॥
आज छोड़ दे सौगन्ध खाऊँ, फेर न तेरे घर में आऊँ।
नित तेरी गागर ऊँचवाऊँ, हाथ छोड़ दे देरी होत है
बोल रह्यो बल भैया॥

४८

भैय्या तेरी गेंद के काज आज मैं जमुना में जाऊँ ।।टेर।।
जो मोकूं वहाँ लग जाय देरी, तुम मत करियो चिन्ता मेरी ।
वही गेंद मैं दूँगा तेरी, ले कर के आऊँ ।।१।।
सौगन्ध तुम साँची खवैयो, तुम मत भग गोकुल में जइयो ।।
मोत जसोदा ते ना कहियौ, तुमको समझाऊँ ।।२।।
कूदत ही पाताल को जाऊँ कालीनाथ नाथ ले आऊँ
काली पीठ पै कमल लदाऊँ फिर गोकुल जाऊँ ।।३।।
कंसराज को फूल पठाऊँ व्रजवासिन को कष्ट मिटाऊँ ।
केशव कहैं कंस को मारूँ तब मैं सुख पाऊँ ।।४।।

४९

मैं माखन नहिं खायोरी मैय्या मैं माखन नहिं खायो री ।।टेर।।
भोर भये गैय्यन के पाछे, मधुबन मोहिं पठायो री ।
चार पहर बंशीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो री ।।१।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किस बिधि पायो री ।
ग्वाल बाल सब बैर पड़त हैं, बरबस मुख लपटायो री ।।२।।
तू जननी जिय की अति भोरी, इनके कहे पतियायो री ।
तेरे जिय में भेद परत है, जानि परायो जायो री ।।३।।
यह ले अपनी लकुट कमरिया, बहुत ही नाच नचायो री ।
सूरदास तब बिहँसि यसोदा, ले उर कंठ लगायो री ।।४।।

५०

घर आवेंगे इक दिन राम, सवरी के हर्ष भयो।
बोलत बचन मतंग ऋषि तू, सवरी सुन दे कान।
एक समय तेरे घर सवरी हे, आवेंगे श्री भगवान्॥
वचन सुनत निश्चव भयो मनमें छोड़यो घर को काम।
बार बार घर बाहिर आवे देखन लछिमन राम॥
चाख चाख नित ही फल लावे, नित ही बन में जाय।
खड़ी खड़ी वो बाट निहारे, कब दर्शन दें आय॥
स्याम गौर सुन्दर दोऊ भाई, घर बिच पहुँचे आय।
प्रेम मगन मुख बचन न आवत, चरणों में गई लिपटाय॥
चरण धोय चरणामृत लीनों, आसन दियो बिछाय।
कंद मूल फल प्रभु को दीना, रुचि रुचि भोग लगाय॥
सबरी जैसी जाति अधम को दी निज धाम पठाय।
स्याम कहे विश्वास रखे से दे दर्शन घर आय॥

५१

छोटी छोटी गैया छोटे छोटे ग्वाल
छोटो सो म्हारो मदन गोपाल ॥टेर॥
आगे आगे गैया पाछे पाछे ग्वाल
मध्य विराजे प्यारो मदन गोपाल ॥ १ ॥
कहाँ रहती गैया कहाँ रहते ग्वाल
कहाँ रहते मेरे मदन गोपाल ॥ २ ॥

नन्द पोल में गैया रहती झोंपड़ी में ग्वाल
सन्त जनों के मन में मदन गोपाल ॥ ३ ॥
क्या करती गैया क्या करते ग्वाल
क्या करते मेरे मदन गोपाल ॥ ४ ॥
प्रेम करती गैया खेल करते ग्वाल
भगतों का मान करते मदन गोपाल ॥ ५ ॥
क्या खाती गैया क्या खाते ग्वाल
क्या खाते मेरे मदन गोपाल ॥ ६ ॥
घास खाती गैया दूध पीते ग्वाल
माखन मिश्री खावै मदन गोपाल ॥ ७ ॥
क्या ओढ़े गैया क्या ओढ़े ग्वाल
क्या ओढ़े मेरे मदन गोपाल ॥ ८ ॥
झूल ओढ़े गैया कम्बल ओढ़े ग्वाल
पीताम्बर ओढ़े मेरे मदन गोपाल ॥ ९ ॥
क्या देती गैया क्या देते ग्वाल
क्या देते मेरे मदन गोपाल ॥१०॥
दूध देती गैया प्रेम देते ग्वाल
अपना स्वरूप देते मदन गोपाल ॥११॥
कैसी कैसी गैया कैसे कैसे ग्वाल
कैसी है म्हारो मदन गोपाल ॥१२॥
धोरी धूमरी गैया नटखट ग्वाल

अट पटीयो म्हारो मदन गोपाल ॥१३॥

कहाँ खोजें गैया कहाँ खोजें ग्वाल
कहाँ खोजें प्यारे मदन गोपाल ॥१४॥

जमुना के तट गैया गोप्यों के घर ग्वाल
संतजनों के पीछे मदन गोपाल ॥१५॥

क्या सुनती गैया क्या सुनते ग्वाल
कथा सुनते मेरे मदन गोपाल ॥१६॥

बंशी सुनती गैया मुरली सुनते ग्वाल
दीनों की टेर सुनते मदन गोपाल ॥१७॥

कैसी चलती गैया कैसे चलते ग्वाल
कैसे चलते मेरे मदन गोपाल ॥१८॥

धीमे धीमै गैया चले नाचे कूदे ग्वाल
ठुमुक ठुमुक चले चले मदन गोपाल ॥१९॥

५२

झूले में झूल लल्ला झूले में झूल
मेरे छोटे से फूल मेरे नन्हें से फूल ॥टेर॥

भक्ति का झूलन आशा की डोरी
मैया तुम्हारी झुलावे हिंडोल ॥१॥

सूरज व चन्दा सी जोड़ी है प्यारी
मैय्या की गोदी में करते किलोल ॥२॥

राम बनेंगे बड़े धनुधारी
राजा बनोगे तो जाना न भूल ॥३॥
पारथ सारथी बन गीता सुनाई
मैय्या को सुनादे अमोल अभी बोल ॥४॥

५३

प्रेम

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे ॥ टेर ॥
मैं तो मेरे नारायण की आप हि हो गई दासी रे ॥१॥
बाप कहै मीरा भई बावरी लोग कहै कुलनासी रे ॥२॥
विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी रे ॥४॥

५४

बसो मोरे नैनन में नँदलाल ॥टेर॥
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैणा बने बिसाल ॥१॥
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती-माल ॥२॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नूपुर सबद रसाल ॥३॥
मीरा प्रभू संतन सुखदाई भगत बछल गोपाल ॥४॥

५५

बरजी मैं काहू की नांहि रहूँ ॥टेर॥
सुणो री सखी तुम चेतन होय कै मन की बात कहूँ ॥१॥
साध संगति कर हरि सुख लेऊँ जग सूँ दूर रहूँ ॥२॥

तंन धन मेरो सबही जावो भल मेरो सीस लहूँ ॥३॥
मन मेरो लागो सुमरण सेती सब का मैं बोल सहूं ॥४॥
मीरां के प्रभु हरि अविनासी सतगुर सरण गहूँ ॥५॥

५६

आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी ॥टेर॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥१॥
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ॥२॥
कैसे प्राण पिया विनु राखूँ, जीवन मूल जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी ॥३॥

५७

कोई कहियौ रे प्रभू आवन की।
आवन की मन भावन की ॥टेर॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै,
बाण पड़ी ललचावन की ॥१॥
ये दोउ नैण कह्यो नहिं मानै,
नदियाँ बहै जैसे सावन की ॥२॥
कहा करूँ कछु बस नहिं मेरो,
पाँख नहीं उड़ जावन की ॥३॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर,
चेरी भई हूँ तेरे पाँवन की ॥४॥

५८

नातो नामको जी म्हाँसूँ तनक न तोड़्यो जाय ॥टेर॥

पाँना ज्यूँ पीली पड़ी जी लोग कहे पिंड रोग।
छाने लाँघण म्हे किया जी, राम मिलन के जोग ॥१॥

बाबल बैद बुलाइया जी, पकड़ दिखाइ म्हाँरी बाँह।
मूरख बैद मरम नहिं जाणे, कसक कलेजे माँह ॥२॥

जा बैदाँ घर आपणे जी म्हाँरो नाँव न लेय।
मैं तो दाझी बिरह की जी तू काहे कूँ ओषद देय ॥३॥

मांस गल-गल छीजिया जी, करक रह्या गल आहि।
आँगलियाँ री मूंदड़ी (म्हारे) आवण लागी बाँहि ॥४॥

रह-रह पापी पपीहड़ा रे, पिंव को नाम न लेय।
जे कोई बिरहण सम्हाले तो, पिव कारण जिव देय ॥५॥

खिण मंदिर खिण आँगणे रे, खिण-खिण ठाढ़ी होय।
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी, (म्हारी) बिथा न बूझै कोय ॥६॥

काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे, कागा तू ले जाय।
ज्याँ देसाँ म्हारो पिव बसै रे, वे देखै तू खाय ॥७॥

म्हाँरे नातो नांव को जो, और न नातो कोय।
मीरा ब्याकुल बिरहणी हरि दरसण दीजो मोय ॥८॥

५६

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राणजी, कासूँ जीवण होय॥टे
धान न भावै नींद न आवै बिरह सतावै मोय।
घायल-सी घूमत फिरूँ रे, मेरो दरद न जाणै कोय॥
दिवस तो खाय गमाइयो रे, रैण गमाई सोय।
प्राण गमाया झूरताँ रे, नैण गमाया रोय॥
जो मैं ऐसी जाणती रे प्रीति कियाँ दुख होय।
नगर ढँढोरो फेरती रे, प्रीति करो मत कोय॥
पंथ निहारूँ डगर बहारूँ, ऊभी मारग जोय।
मीरा के प्रभू कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय॥

६०

मैं तो हूँ भगतन को दास, भगत मेरे मुकुटमणि॥टे
मोकूँ भजे भजूँ मैं उनको हूं दासन को दास।
सेवा करे करूँ मैं सेवा हो सच्चा विश्वास—
यँही तो मेरे मन में ठणी॥
जूठा खाऊँ गले लगाऊँ नहीं जाति को ध्यान।
आचार-विचार कछु नहीं देखूँ, देखूँ मैं प्रेम-सन्मान—
सरण - हित नारि बणी॥
पग चाँपू और सेज बिछाऊँ नोकर बनूँ हजाम।
हाँकूँ बैल बनूँ [illegible] बिन तनख्वा रथवान—
अलख की लखता बणी॥

अपनो परण बिसार भक्त को पूरो परण निभाऊँ।
साधु जाचक बनूँ कहे सो, बेचे तो बिक जाऊँ—
और क्या कहूँ घणी ॥४॥

गरुड़ छोड़ बैकुंठ त्याग के, नंगे पाऊँ धाऊँ।
जहाँ-जहाँ भीड़ पड़े भक्तों में, तहाँ-तहाँ दौड़ा जाऊँ—
खबर नहीं करूँ अपणी ॥५॥

जो कोइ भक्ति करे कपट से उसको भी अपनाऊँ।
साम, दाम और दण्ड, भेद से सीधे रस्ते में लाऊँ—
नकल से असल बणी ॥६॥

जो कुछ बनी बनेगी उसमें कर्त्ता मुझे ठैरावे—
नरसी हरि गुण चरणन चेरो, औरन सीस नवावे—
पतिब्रता एक धणी ॥७॥

६१

मीठा लागे माधवा निज नाम तुम्हारा।
कोई आसण ना रहे धरती गिल गई सारा ॥टेर॥

मनुरे सरीसा राजवी कुंजर करोड़ अठारा।
लाल लूंगीरा ने जा फंरहरे बाजे बम्ब नगारा ॥१॥

ऊँचा मन्दिर चुणावते-बिच कोटिक धारा।
[illegible] बाजे [illegible] [illegible] न पारा ॥२॥

भीम सरीसा महाबली दल ठंभण हारा।
सहदेव सरीसा ज्योतिषि-बांचे पुराण अठारा॥
पीर पैगम्बर औलिया-जोगी जंगम धारा।
कहे कबीर सुन साधवा हम भी चालण हारा॥

६२

मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता, चाहे कर लो लाख उपाय॥टे॰
मिले न यमुना सरस्वती में, मिले न गङ्ग नहाय।
प्रेम-सरोवर में जब डूबे, प्रभू की झलक लखाय॥
मिले न पर्वत में निर्जन में, मिले न बन भरमाय।
प्रेम-बाग घूसे तो प्रभू को, घट में ले पधराय॥
मिले न पण्डित को ज्ञानी को, मिले न ध्यान लगाय।
ढाई अक्षर प्रेम पढ़े तो, नटवर नयन समाय॥
मिले न मन्दिर में मूरति में, मिले न अलख जगाय।
प्रेमबिन्दु जब दृग से टपके, तुरत प्रकट हो जाय॥

६३

म्हारों वालो भूखो छे, प्रेम नो रे।
नथी जोवे आचार - विचार,
प्रेम देखे जठे ही वालो जीमले रे ॥टेर॥
ये ने जाती पाती नी परवा न थी रे।
मीठा खाया भीलनी ना बेर ॥१॥ प्रेम॰
काचा पाका मोटा मोटा [illegible]
खायो करमा बाई नो लूखो खीचडो रे ॥२॥

वालो सुदामा ना काचा तन्दुल पा गयो रे।
रांध्या बिना ही कर-कर स्वाद ॥३॥ प्रेम०

वालो दुर्योधन ना मेवा त्यागिया रे।
पायो साग विदुर घर जाय ॥४॥ प्रेम०

येन खावा पीवानी परवा न थी रे।
यो तो पोते त्रिलोकी नो नाथ ॥५॥ प्रेम०

अचलुराम प्रभू संग प्रेम करो रे।
प्रेमी भक्ता नो राखे छे मान ॥६॥ प्रेम०

६४

माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल ॥टेर॥
कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े,
लियो री बजंता ढोल ॥१॥

कोई कहै मुँहघो, कोई कहै सुँहघो,
लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कालो, कोई कहै गोरो,
लियो घूंघट पट खोल ॥२॥

कोई कहै घर में, कोई कहै बन में
राधा के संग किलोल।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर,
आवत प्रेम के मोल ॥३॥

६५

भज मन चरण कँवल अविनासी ॥टेर॥
जेताई दीसे धरण गगन बिच, तेताई सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ-ब्रत कीन्हें, कहा लिये करवत-कासी ॥१॥
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी ॥२॥
कहा भयो है भगवा पहर्याँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी ॥३॥
अरज करूँ अबला कर जोड़े, स्याम तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी ॥४॥

६६

नारी (ड़ी) हूँ न जाने वैद्य, निपट अनारी (ड़ी) है ॥टेर॥
पीली पीली पान जैसी पलंग पोढ़ाई ऐसी।
तुम घर जाओ बैद मेरे रोग भारी है ॥१॥
पीर है कलेजे मांही मूरख ढंढोरे बांहि।
जब से सिधारा स्याम बिरह बान मारो है ॥२॥
जड़ी सब झूठ भई कारी हुन लागे काई।
द्वारिका में बसे बैद वासूँ मेरी यारी है ॥३॥
मीरां को जिवाई चाहो, स्याम तुम बेग आओ।
रोग को कटैयो एक कुंज को बिहारी है ॥४॥

६७

थांने कांई कांई कह समझाऊँ म्हारा बाला गिरधारी।
पूरब जनम की प्रीति हमारी, अब नहीं जात निवारी ॥टेर॥
सुन्दर बदन निरखियो जबसे, पलक न लागे म्हाँरी।
रोम रोम में अँखियाँ अटकी, नख सिख की बलिहारी ॥१।
हम घर वेग पधारो मोहन, लग्यो उमावो भारी।
मोतियन चौक पुरावां बाला, तन मन तोपर वारी ॥ २॥
म्हांरो सगपन थां सूं गिरधर, मैं छूं दासी थारी।
चरण कमल मोहे राखे साँवरा, पलक न कीजे न्यारी ॥३॥
बृन्दावन में रास रचायो, संग में राधा प्यारी।
मीरा कहै गोप्यांरो बालो, हमरी सुरति बिसारी ॥४॥

६८

अखियाँ हरि दर्शन की प्यासी ॥टेर॥
देख्यो चाहत कमल नयन को, निश-दिन रहत उदासी ॥१॥
केसर तिलक मोतियन की माला, बृन्दावन के बासी ॥२॥
नेह लगाय त्याग गये तृण सम, डारि गये गल फाँसी ॥३॥
काहू के मन की को जानत लोगन के मुख हाँसी ॥४॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को, लैहों करवत कासी ॥५॥

६९

श्याम तोरी मुरली नेकु बजाऊँ ॥
जोई जोई तान भरो मुरली में, सोई सोई गाय सुनाऊँ ॥

हमरी बिन्दियाँ तुमही लगाओ, मैं शिर मुकुट धराऊँ ॥१॥

हमरें भूषण तुम सब पहिरौ, मैं तुम्हरे सब पाऊँ ॥
तुमरे सिर माखन की मटुकी, मैं मिलि ग्वाल लुटाऊँ ॥२॥
तुम दधि वेचन जाओ बृन्दावन, मैं मग रोकन आऊँ ॥
सूरश्याम तुम बनो राधिका, मैं नन्दलाल कहाऊँ ॥३

७०

म्हारे जनम-मरण रा साथी थाँ ने नहिं बिसरूँ दिन राती ॥टेर॥
थाँ देख्या न कल बिन पड़त है जाणत मेरी छाती।
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारूँ रोय-रोय अखियाँ राती ॥१॥
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती।
दोउकर जोड्याँ अरज करूँ छूँ सुण लीज्यो मेरी बाती ॥२॥
ओ मन मेरो बड़ो हरामी ज्यों मद मातो हाथी।
सतगुरु हाथ धरया दोऊ ऊपर आँकुस दे, समझाती ॥३॥
पल-पल प्रभु को रूप निहारूँ, निरख-निरख सुखपाती।
मीरां कह प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल रंग राती ॥४॥

७१

म्हाने रामजी सदा बर दीज्यो हे माय !
अमरा पुर म्हांरो सासरो ॥
म्हांने इण जग में मति राखो हे माय ! किसो भरोसो इण सासरो ॥टेर॥
मैं जो अयानी धीवड़ नानी, म्हांरी माता बड़ी विधाता हे माय ॥१॥
बावल ज्ञानी सब सिधि जाणी, म्हांने चार पदारथ दाता हे माय ॥२॥

चँवरी मांडी कदे नहीं रांडी, म्हांरो सतगुरु लगन लिखायो हे माय ॥३॥

सदा सुहागण कदेन दुहागण, अजर अमर पद पायो हे मायँ ॥४॥
सदा सपूती कदे न अऊती, म्हांरे शबद पुत्र भल जायो हे माय ॥५॥
रामदासा चरण निवासा, ये तो दयाल बाल जस गायो हे माय ॥६॥

७२

सूरत दीनानाथ से लगी,
तूँ तो समझ सुहागण सुरता नार ॥टेर॥
लगनी लहँगो पहिर सुहागण,
बीती जाय बहार।
धन जोबन है पावणो री,
मिलै न दूजी बार ॥१॥
राम नामको चुड़लो पहिरो,
प्रेम को सुरमो सार।
नकबेसर हरि नाम की री,
पहिर चलोनी परलो पार ॥२॥
ऐसे वर को क्या बरूँ,
जो जनमै और मरि जाय।
बर बरिये एक साँवरो री,
मेरो चुड़लो अमर होय जाय ॥३॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री,
हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचा री,
छिन में गेरया छै बिगोय ॥४॥

सुरत चली जहाँ मैं चली री,
कृष्ण नाम झलकार।
अविनासी की पोल पर जी,
मीरां करै छै पुकार ॥५॥

७३

अब नहीं मानूँ राणा थांरी बात मैं बर पायो गिरधारी ॥टेर॥
मणि कपूर की एक गति है, कोऊ कहो हजारी।
कंकर कंचन एक गति है, गुंज मिरच इक सारी ॥१॥
अनड़ घड़ी को सरणो लीनो, हाथ सुमरनी धारि।
जोग लियो जब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥२॥
सत्संगत में दिल है राजी, भइ कुटुम्ब से न्यारी।
किरोड़ बार समझावो मोकूं, चालूँगी बुद्धि हमारी ॥३॥
रतन जड़ित की टोपी सिर पे, हार कंठ को भारी।
चरण घूघरू घमक बजत है, मैं करूँ स्याम संग यारी ॥४॥
लाज-सरम सब ही मैं डारी, यो तन चरण अधारी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, झख मारो, रे संसारी ॥५॥

७४

गली तो चारों बंद हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाय ॥टेर॥
ऊँची-नीची राह लपटीली, पाँव नहीं ठहराय।
सोच-सोच पग धरूँ जतन से, बार-बार डिग जाय ॥१॥
ऊँचा-नीचा महल पिया का म्हाँ सूँ चढ्यो न जाय।
पिया दूर पंथ म्हारो झीणों, सुरत झकोला खाय ॥२॥

कोस - कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड-पैंड बटमार।
हे बिधना कैसी रच दीनी, दूर बसयो म्हारो गाँव ॥३॥
मीरा के प्रभू गिरधर नागर, सतगुरु दयी बताय।
जुगन - जुगन से बिछड़ी मीरां घर अब लीना आय ॥४॥

७५

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर-नाजिर कद की खड़ी ॥टेर॥
साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या,
सबने लगूँ कड़ी।
तुम बिन साजन कोई नहीं है,
डिगी नाव मेरी समँद अड़ी ॥१॥
दिन नहिं चैन रैण नहि, निंदरा
सूँखूँ खड़ी खड़ी।
बाण बिरह का लग्या हिये में,
भूलूँ न एक घड़ी ॥२॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी,
बन के बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरा में कहिये,
सौ पर एक घड़ी ॥३॥

७६

पाँव परूं मैं तेरे जोगी मत जा मत जा ॥टेर॥
अगर चन्दन की चिता जलाऊँ अपने हाथ जलाजा ॥१॥

जल बल हुई भस्म की ढ़ेरी, अपने अंग लगाजा ॥२॥
प्रेम भगति को पैड़ो न्यारो, हमकूं राह बताजा ॥३॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ज्योति में ज्योति मिलाजा ॥४॥

७७

या बदनामी लागे राणाजी म्हाने मीठी ॥टेर॥
साकड़ी सेरी में म्हांने सतगुरु मिलिया, किस बिध फिरूं में अपूठी ॥१॥
म्हारे सांवरिया रे दर्शन जांताँ, दुर्जन लौगां म्हाने दीठी ॥२॥
थांरे सहररा राणा लोग निमांणा बात करे अण दीठी ॥३॥
थांरो सांवरियो मीरां म्हाने बतावो, नहीं तो प्रीत थांरी भूठी ॥४॥
म्हारो सांवरियो राणा घट घट व्यापे, थारे हिये री कियां फूठी ॥५॥
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, चढ़ गयो रंग मजीठी ॥६॥

७८

आवो मन मोहना आवो नंद नँदन।
गोपी जन प्राण धन राधा उर चन्दन ॥टेर॥
कैसे तुम गणिका के औगुण निवारे नाथ।
कैसे तुम भीलनी के जूठे बैर खाये हो ॥१॥
कैसे तुम द्वारिका में द्रोपदी की टेर सुनी।
कैसे तुम गज राज काज नंगे पांव धाये हो ॥२॥
कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे।
कैसे तुम उग्रसेन बन्दी ते छुड़ावे हो ॥३॥

कैसे तुम भारत में भीसम को प्रण राख्यो।
कैसे वसुदेव जी के बन्धन छुडाये हो ॥४॥
करूणा निधान स्याम मेरी वेर मूंदे कान।
असरण सरण स्याम सूर मन भाये हो ॥५॥

७६

लग रही आस करूँ व्रजवास तलहटी गोवर्धन की मैं ॥टेर॥
ध्यान धरूँ और भजन करूं, छैया कदमन की मैं।
सदा करू सत्संग मंडली, संत जननको मैं ॥१॥
पल पल डगर बुहार रेणुका, व्रजगलियन की मैं।
शीश चढ़ा रज अंग रमाऊँ, कृष्ण चरण की मैं ॥२॥
कर जमना में स्नान नित्य हो, पाप हरण की मैं।
अभिलाषा प्यासी है अंखियां, हरिदर्शन की मैं ॥३॥
भूख लगै घर घर की भिक्षा, करूं द्विजन की मैं।
जमुना जल में धोय मेंट करूं नंद नँदन की मैं ॥४॥
व्रज तज इच्छा करू नहीं, वैकुण्ठ भवन की मैं।
घासी राम चरण लिपटायो, गिरिराजधरण की मैं ॥५॥

८०

मैं तो गिरधर के रंग राती ॥टेर॥
पचरंग चोला पहिर सखीरी, झुरमुट खेलन जाती।
झुरमुट में मोहि मिलियो सांवरो, खोल मिली तन गाती ॥१॥
और सखि मद पी-पी माती, मैं बिन पिये रहुँ माती।
मैं रस पीऊँ प्रेम भट्टी को, छकी रहुँ दिन राती ॥२॥

कोई के पिया परदेश बसत है, लिख लिख भेजत पाती।
मेरे पिया मेरे घट में बिराजे, बात करुं दिन राती ॥३॥

सुरति निरति का दिवला संजोऊं, मनसा की करलूं बाती।
अगम घाणी से तेल कढ़ाऊँ, बाल रही दिन राती ॥४॥

पीहर रहुँ ना सासरे में, प्रभु से सैन लगाती।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, चरण रहूँ दिन राती ॥५॥

८१

मैं नित भगतन हाथ बिकाऊँ।
आठों जाम हृदय में राखूं पलक नहीं विसराऊँ ॥टेर॥

कल न परत बैकुंठ बसत मोहि, जोगिन मन न समाऊँ।
जहँ मम भगत प्रेम युत गावहिं तहाँ बसत सुख पाऊँ ॥१॥

भगतन की जैसी रुचि देखूं तैसो वेष बनाऊँ।
टारूँ अपने बचन भगत लगि, तिनके बचन निभाऊँ ॥२॥

ऊँच नीच सब काज भगत के निज कर सफल बनाऊँ।
पग धोऊँ रथ हांकू मांजू बासन छान छवाऊँ ॥३॥

माँगू नहीं दाम कछु तिन से, नहिं कछु तिनहिं सताऊँ।
प्रेम सहित जल पत्र, पुष्प, फल जो देवे सो खाऊँ ॥४॥

निज 'सरवस' भगतन को सौंपू अपनो स्वत्व भुलाऊँ।
भगत कहे सोहि करुँ निरन्तर, बेचे तो बिक जाऊँ ॥५॥

८२

ब्रज में कैसी धूम मचाई, सखी सब देखन आई ।।टेर।।
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, मंजीरा सहनाई।
उड़त गुलाल भये बादल, केसर कीच मचाई।
मानो मघवा झड़ि लाई ।।१।।
इततें आई कुँवरि राधिका, उततें कुँवर कन्हाई।
खेलत फाग परस्पर हिल-मिल, शोभा बर्णि न जाई।
घरे घर बटत बधाई ।।२।।
राधा सेन करी सखियन सों, यूथ-यूथ मिल धाई।
पकड़ो री पकड़ो श्यामसुन्दर को, घर अब जान न पाई।
करो अब मन की भाई ।।३।।
छीन लियो मुख मुरली पीतांबर, शिरपर चुंदरी ओढ़ाई।
बिंदी भाल नयन बिच काजर, नकबेसर पहनाई।
मानो नई नारि बनाई ।।४।।
फाग खेले बिन जान न देंगी, करियो कोटि उपाई।
लैं हैं चुकाय कसर सब दिन की, तुम हो ढीठ कन्हाई।
छीन दधि माखन खाई ।।५।।
कहाँ तो गये तेरे पिता नंद जो रे, कहाँ है यशोमति माई।
कहाँ तो गये तेरे सखा संगके सब, कहाँ गये हलधर भाई।
तुम्हे जो लेत छुड़ाई ।।६।।
धन गोकुल धन धन बृन्दावन, धन जमुना जदुराई।
राधा कृष्ण जुगल जोड़ी पर नंददास बलि जाई।
प्रीति उर नाँहि समाई ।।७।।

८३

मति मारो पिचकारी, श्याम अब देऊँगी गारी ॥टेर॥
भीजेगी लाल नई मेरी अंगियाँ, चुंदरीं बिगरेगी न्यारी।
देखेंगी सास रिसायेंगी मोपे, संग की ऐसी हैं दारी—
हँसेगी सब दे दे तारी ॥१॥
घाट बाट सब सों अटकत हो, लै लै रारि उधारी।
कहाँ लौ तेरी कुचाल कहौं मैं, एक एक वृज नारी—
जानत करतूति तिहारी ॥२॥
मूठ अबीर न डारो दृगन में दूखेगी आँख हमारी।
नारायण न बहुत इतरावो, छांडो डगर गिरधारी—
नये भये तुमही खिलारी ॥३॥

८४

होरी हो ब्रजराज दुलारे ॥टेर॥
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन, फागहीं फाग पुकारे।
आज देखियो सैल फाग की, पिचकारिन के फुंहारे—
चलें जब कुंकुम नारे ॥१॥
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग रे छै बापन वारे।
के तो निकस के होरी खेलो के मुख से कहो हारे—
जोर कर आगे हमारे ॥२॥
निपट अनीति उठाई रे तुमने रोकत गैल गरारे।

नारायण अब खबर परेगी, नेक तू आय दुवारे—
[illegible] ॥३॥

८५

होरी खेल मना रे, फागुण के दिन च्यार ॥टेर॥
बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झुणकार।
बिन सुर राग छतीसों गावै, रोम रोम रणकार ॥१॥
सील संतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीति पिचकारि।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार ॥२॥
घट के पट सब खोल दिये हैं, लोक लाज सब डार।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार ॥३॥

८६

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवती ब्रजनारी ॥टेर॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन, अपने हाथ बिहारी।
भरि-भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ॥१॥
छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राणपियारी।
गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी ॥२॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यौ रस ब्रज भारी।
मीरा कूं प्रभु गिरधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ॥३॥

८७

कैसे आऊँ रे साँवरिया तेरी ब्रज नगरी, कैसे आऊँ रे ॥टेर॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच बहै जमुना गहरी ॥१॥
पाँऊँ चलूँ तो मेरी पायल बाजे कूद पड़ूँ तो डूबूँ सगरी ॥२॥

भर पिचकारी मेरे मुख पर डारी, भीग गई अंगियाँ सगरी ॥३॥
केसर कीच मच्यो आँगन में, रपट पड़ी राधे गवरी ॥४॥
चन्द्र सखि भज बाल कृष्ण छवि चिरंजी रहो राधाकृष्ण जोरी ॥५॥

८८

दधि दूँगी साँवरिया थोरी बंसी बजाय दधि दूंगी रे ॥टेर॥
ऐसी बजाय जैसी जमुना ऊपर बाजी रे, बहतो नीर तुरंत थमजाय ॥१॥
ऐसी बजाय जैसी माधोबन में बाजी रे,चरती धेनु मगन होयजाय ॥२॥
ऐसी बजाय जैसी बंसीवटमें बाजी रे ग्वालबाल हरषित होयजाय ॥३॥
ऐसी बजाय जैसी बृन्दावनमें बाजीरे,संगकी सहेली मगन होयजाय ॥४॥
चन्द्र सखि भज बाल कृष्ण छवि, मुरली की धुनसुन मन रमजाय ॥५॥

८८

ब्रज की लज राख मुकुटवारे, ब्रज की लज ॥टेर॥
सूरज चन्द्र तेरो ध्यान धरत है, ध्यान करत नव लख तारे।
इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर तब गिरि वर कर पर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत गाय गोप के रखवारे ॥

६०

श्यामा श्याम सलोनी सूरत को शृंगार वसन्ती है ॥टेर॥
मोर मुकुट की लटक वसन्ती
चन्द्रकला की चटक वसन्ती
मुख मुरली की मटक वसन्ती
सर पे पेच श्रवण कुण्डल छविदार वसन्ती है ॥१॥

माथे चन्दन लग्यो वसन्ती
कटि पीताम्बर कस्यो वसन्ती
मन मोहन मन बस्यो वसन्ती
गल सोहे वन माला फूलन हार वसन्ती है ॥२॥
कनक कुण्डला हस्त वसन्ती
चले चाल अल मस्त वसन्ती
पहर रहे पोशाक वसन्ती
रुनक भुनक पग नूपुर की भनकार वसन्ती है ॥३॥
संग ग्वाल के रोल वसन्ती
बजे चंग डफ ढोल वसन्ती
बोल रहे सब बोल वसन्ती
सब सखियन में राधेजू सरदार वसन्ती है ॥४॥
परम प्रेम परसाद वसन्ती
लोग रसीलो स्वाद वसन्ती
है रहि सब मरजाद वसन्ती
घासीराम श्याम श्यामा को नाम वसन्ती है ॥५॥

६१

होरी खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरोरी।
रंग से बोरोरी, कन्हैया को रंग में बोरोरी ॥टेर॥
कोरे-कोरे कलश मंगा, या में केशर घोरोरी।
लोक लाज मरजाद सभी, फागन में बोरोरी ॥१॥

मुखते केशर मलो करो, कारे ते गोरो री।
हाथ जोड़ जब करे बिनती, तब चाहे छोरो री ॥२॥
हरे बाँस की बांसुरिया, याहे तोड़ मरोरो री।
चन्द्र सखी यूं कहे आज बन आयो भोरो री ॥३॥

६२

चेतावनी

तूं सुमिरन करले मेरा मना, बीती जात ऊमर हरि नाम बिना ॥टेर॥
पंछी पंख बिना हस्ती दन्त बिना, नारी तो देखो भला पुरुष बिना।
वेश्या को पुत्र पिता बिना हीनो, वैसे ही प्राणी हरिनाम बिना ॥१॥
देहि नैन बिना, रैन चन्द्र बिना, धरती देखी भला मेघ बिना।
जैसे पण्डित वेद बिन हीना, तैसे ही प्राणी हरि नाम बिना ॥२॥
कूप नीर बिना-धेनु खीर बिना, मन्दिर देखो भला दीप बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरिनाम बिना ॥३॥
काम क्रोध, मद, लोभ निवारो, छोड़ो विरोध संत जनो।
कह नानक सुनो भगवन्ता या जग में कोई नहीं अपना ॥४॥

६३

दिल की आँख उघाड़, अब तू जाग रे जिया ॥टेर॥
पाप किया तू आगे भारी, दुःख वियोग भुगते बीमारी।
भोगे हैं पुण्य पाप तेरा आगला किया ॥१॥
रसना से तू नाम लिया कर, हाथों से कुछ दान किया कर।
संग चले पुण्य पाप तेरा हाथ का किया ॥२॥

इतनी मन तेरे क्यों बेइमानी, भूल गयो तू सारंग पानी।
इक पल बैठ एकान्त प्रभु का नाम ना लिया ॥३॥

अब मनुवा उलट मत खेलो, राम मिले वो रस्ता लेलो।
मन में धार विचार रट लो राम सिया ॥४॥

कहाँ गये तेरे बाप बडेरा, कहाँ गये संग-साथी तेरा।
करे नहीं सोच-विचार क्यों तेरा फूटग्या हिया ॥५॥

भज ले रे तू अंतरयामी शिक्षा देवे मोहन स्वामी।
रट्यो नहीं हरि नाम सुधारस क्यों ना पिया ॥६॥

६४

जनम लियो वाने मरणो पड़ोसी मौत नगारो सिर कूटे रे।
लाख उपाय करो मन कितना, बिना भजन नहिं छूटे रे ॥टेक॥

जमराजा रो आयो मूलरो, प्राण पलक में छूटे रे।
हिचकी हाल हचीड़ो लागे नाड़ियाँ तड़तिड़ तूटे रे ॥१॥

भाई बन्धु कुटम्ब कबीलो शामजी रूठयाँ सब रूठे रे।
एक पलक में प्रलय हो जासी, घाल रथी में तन कूटे रे ॥२॥

जीवड़ा ने लेय जमड़ा जब चाले, क्रोध कर कर कूटे रे।
गुरजांरी घमसाण मचावे, तुरंत तालवो फूटे रे ॥३॥

जीवड़ा ने जमड़ा नरक में डाले, कीड़ा कागला चूँटे रे

भुगतेलो जीव भजन बिना भाई, जमड़ा जुगों जुग

चतुरायां में धूल पड़ेली थारा करमड़ा फूटे रे।
करमां रो हींए कीचड़ कलियो, बिना भजन नही छूटे रे ॥५॥
राम सुमिरले सुकरत कर ले, मोह बंधन तब टूटे रे।
कहत कबीर सुख चावे रे जीव रो, राम नाम धन लूटे रे ॥६॥

६५

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार ना हो जाय।
स्वपने में किसी जीव का अपकार ना हो जाय ॥टेर॥
पाया है तन अनमोल सदाचार के लिए।
विषयों में फँस करके कहीं अनाचार ना हो जाय ॥१॥
सेवा करो निज धर्म की, शुभ कर्म हरी भजन।
इतना भी करने के पीछे, अहंकार ना हो जाय ॥२॥
मंजिल असल मुकाम की तय करनी है तुम्हें।
जग ठग नगरमें फँस करके, गिरफ्तार ना हो जाय ॥३॥
माधव लगी है बाजी माया मोह जाल की।
धोखे में फँस करके कहीं अब हार ना हो जाय ॥४॥

६६

मूढ़ मन चेत अज्ञानी रे ॥ टेक ॥
तूँ मन मांहि भया मस्ताना, झूठा तन साचा कर जाना।
है दो दिन की दमक, रहे थिर नांहि जवानी रे ॥१॥
तन में अतर सुगंधि लगावे, असन वसन भूषण पहिरावे।
पोषत करा कर प्रेम, जायगी या जिन्दगानी रे ॥२॥

कूर कपट करके धन जोड़्यो, देस विदेस दसों दिशि दौड़्यो।
कर माया सूँ प्यार, प्रीति प्रभु सों न पिछानी रे ॥३॥
दिन दिन छिन-छिन में तन छीजै, करना है सो अब कर लीजै।
बटै न कौड़ी मौल, गया मोती का पानी रे ॥४॥
चेत सके तो चेत अयाना, इक दिन अंत अकेला जाना।
जन भावन भज राम, रैन पिछली रही आनी रे ॥५॥

६७

मूढ़ मन राम बिसारयो रे ॥ टेक ॥
लाग रह्यो लालच की लपट में, काम, क्रोध, मद मोह झपट में।
कर कर कूड़ कपट, खट पट में जनम बिगारयो रे ॥१॥
जनम दियो प्रभु ताहि न जान्यो, पर कारज कबहूं न पिछान्यो।
इत उत दौरत फिरत, लोभ ममता मद मारयो रे ॥२॥
जनम गमाय दियो गल बल में, आशा पास परी है गल में।
इक पल बैठ एकान्त ध्यान हरि को नहीं धारयो रे ॥३॥
सत संगती हरि भजन न कीनो, पामर जीव विषय रस पीनो।
काच किरन्न मन लाय, हरि सम नरतन हारयो रे ॥४॥
सुर दुर्लभ मिनखा तन पायो, ज्ञान बिना पसु जेम गमायो।
भावन भजन विहीन अंत जमलोक सिधारयो रे ॥५॥

६८

राम कहो राम कहो, राम कहो बावरे।
अवसर ना हार प्यारे, भलो पायो दाँव रे ॥टेक॥
जिन तोहूँ तन दियो, ताको नहीं ध्यान कियो।
जनम सिरानो जात, लोहे को सो ताव रे ॥१॥

रामजी की गाय गाय, रामजी रिझाय रे।
रामजी के चरण कमल, चित्त माँहि लाव रे ॥२॥
कहत मलूक दास, छोड़ पराई आस।
आनन्द मगन होय, हरि गुण गाव रे ॥३॥

९९

तुंही-तुंही याद मोहे आवे दरद में ॥टेर॥
लख चौरासी भटकत-भटकत, भटक-भटक मर जावे दरद में ॥१॥
सुख-सम्पति का सब कोई संगी, दुख में निकट नहीं आवे दरद में ॥२॥
भाई वन्धु कुटुम्ब कबीलो, भीड़ पड़े भग जावे दरद में ॥३॥
साह हुसन फकीर साँई का, हरख निरख गुण गाऊँ दरद में ॥४॥

१००

तूने हीरो सो जनम गमायो, भजन बिना बावरे ॥टेर॥
ना तू आयो संतां शरणे, ना तू हरि गुण गायो।
पचि-पचि मर्‌यो बैल की नांई, सोय रह्यो उठ खायो ॥१॥
ओ संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो।
चतुर तो माल चौगुना कीना, मूरख मूल गमायो ॥२॥
ओ संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायों।
मारी चोंच निकल गई रूई, शिर धुन-धुन पछितायो ॥३॥
ओ संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछु नहीं आयो ॥४॥

१०१

मैं तो हूं संतन को दास, जिन्होंने मन मार लिया ॥टेर॥

मन मारया तन बस किया रे, हुआ भरम सब दूर।
बाहिर तो कछु दीखत नाहीं, भीतर चमके नूर ॥१॥

काम क्रोध मद लोभ मार के, मिटी जगत की आस।
बलिहारी उन संत की रे, प्रकट किया प्रकास ॥२॥

आपो त्याग जगत में बैठे, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अंतर नांही, संत कहो चाहे राम ॥३॥

नरसीजी के सतगुरु स्वामी, दिया अमीरस पाय।
एक बूंद सागर में मिल गइ, क्या तो करेगा जमराय ॥४॥

१०२

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ॥टेर॥

टुक नींदसे अखियाँ खोल जरा, और अपने रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीति करन की रीति नहीं, रब जागत है तू सोवत है ॥१॥

जो कल करना है वो आज करले, जो आज करना वो अब करले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, तब पछिताये क्या होवत है ॥२॥

नाहक भुगत अपनी करनी, ऐ पापी! पाप में चैन कहाँ।

जब पाप की गठड़ी सीस धरी, अब सीस पकड़ क्यों रोवत है ॥३॥

१०३

मत बाँधो गठरिया अपजस की ॥टेर॥
यो संसार बादल की छाया, करो कमाई भाई हरि रस की ॥१॥
जोर जवानी ढलक जायगी, बाल अवस्था तेरी दिन दस की ॥२॥
धर्म दूत जब फाँसी डारे, खबर लेवे थारे नस-नस की ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जब तेरे बात नहीं बस की ॥४॥

१०४

जगत में झूठी देखी प्रीति ॥टेर॥
अपने ही सुख सो सब लागत, क्या दासा क्या मीत ॥१॥
मेरो मेरो सभी कहत है, हित सूं बान्ध्यो चीत ॥२॥
अन्तकाल संगी नहीं कोऊ, यह अचरज की रीत ॥३॥
मन मूरख अजहूं नहीं समझत, सीख दे हारयो नीत ॥४॥
नानक भव जल पार परे जो, गाले प्रभू के गीत ॥५॥

१०५

साधो, मन मानत नहीं मोरा
याकूं बार-बार समझाऊँ-जग में जीना थोरा ॥टेर॥
या काया का गरब न कीजे क्या सांवर क्यों गोरा।
बिन हरि भजन काम नहीं आवे कोटि सुगन्ध चकोरा ॥१॥
इस माया का गरब न कीजे क्या हाथी क्या घोरा।
जोड़ जोड़ धन बहुत चले गये सहस्र लाख करोरा ॥२॥
दुविधा दुरमति और चतुराई जनम गयो नर बौरा।
कहे कबीर चरण चित राखो ज्यूं सूई छिद्र डोरा ॥३॥

१०६

साधो! यह जग भरम भुलाना ॥टेर॥
मात-पिता भाई सुत बनिता, ताके रस लपटाना ॥१॥
यौवन, धन-प्रभुता के मद में, निशदिन रहत दिवाना ॥२॥
राम नाम का सुमिरन छोड़ा, माया हाथ बिकाना ॥३॥
दीन दयाल सदा दुख भंजन, तासो मन न लगाना ॥४॥
जन नानक कोटिन में किनहूँ, गुरु मुख होय पिछाना ॥५॥

१०७

मन रे अब तूं जग से छूटो।
सीस उघाड़े गल बिच कंथा, कर में कमँडल फूटो ॥टेर॥
फाटा पाँव मैल तन ऊपर, उघरत नांहि अँखियाँ।
मतवाले ज्यों झूमत डोले, एक न माने संकियाँ ॥१॥
ऐसा होय चल्या बसती में, भिक्षा कारण डोले।
पाँच सात छोरा चोगड़दे, बैंडो कहि कहि बोले ॥२॥
ऐसी बिधि विचरे जग माँहि, संग न कोई साथी।
धत्ता धत्त वैराग इसी विधि, ज्यूँ मद छकियो हाथी ॥३॥
छोड़ा स्वाद दिया तन भाड़ा, राम नाम लिव लाया।
तुलसीदास गुरू परतापें, यूँ अमरापुर पाया ॥४॥

१०८

दुनिया से नेह लगाय के मत भूले नाम हरी का ॥टेर॥

नौ दस मास गर्भ में झूल्यो-रामजी रटण को वचन कबूल्यो

बाहिर आय सारी कुछ भूल्यो-मन्दिर महल बनाय के।
सुख भोगे सहज परी का ॥१॥
मात-पिता भाई सुत नारी-सब मतलब के खातिरदारी।
ऊपर बाजे काल कटारी-सब दूर खड़े हो जायँगे—
कोई संग नहीं बिगड़ी का ॥२॥
राम नाम की भरले नौका-सहज लग्या नर तेरा मौका।
धन यौवन सुपना दिन दो का-जा उतरो हरि गुण गाय के—
फल पावोगे देह धरी का ॥३॥
तूँ कहता नर मेरी मेरी-साढे तीन हाथ नहिं तेरी।
सिर पर काल लगा रहा फेरी-प्राण तजे मुख बाय के—
जैसे वोक मरे बकरी का ॥४॥
जग सुपना है रैण बसेरा, बिन भगवान कोई नहिं तेरा।
सखो राम समझो मन मेरा-तिर चले राम गुण गाय के—
वाको डर नहिं जम नगरी का ॥५॥

१०६

राम सुमर ले रे मन गैला, तने सतगुरु देत है हेला ॥टेर॥
अब माया में विलम रह्यो है, मन में बण रह्यो छैला।
सुख में तो थारे साथी घणा है, दुख में याद करेला ॥१॥
लोभ मोह की नदी चलत है, तामें नहीं निभेला।
भवसागर में बुहो जात है, आपहि आप अकेला ॥२॥
जैसे पत्ता डाल से टूटा, मिलना फेर दुहेला।

क्या जानूँ कहाँ जाय पड़ेगा, लगै पवन का झेला ॥३॥

जैसे नाव समुद्र के ऊपर, दैव संयोग भया मेला।
माता पिता सुत कुटुम्ब कबीलो, तीरथ का सा मैला ॥४॥
सुकृत सौदा करले प्राणी, यह तेरे संग चलेला।
भज भगवान महा सुख पावे, माधव नाम निभेला ॥५॥

११०

भजन बिन दिन जावे दिन जावे, मनरे हरि गुण क्यों नहिं गावे ॥टेर॥
छिन छिन करतां पल पल बीते, पल से घड़ी घट जावे।
घड़ी घड़ी करता पोहो वदीते, (यूँ) आठ पोहोर घुल जावै ॥१॥
तैल फुलेल का मरदन करणा ताते जल सूँ न्हावै।
अन्तकाल का देख तमासा, काल झपट ले जावै ॥२॥
सुकृत काम कबू नहिं कीनो, मोह माया चित लावै।
साधु संगती में कदे न बैठे बातां बहुत बनावै ॥३॥
मानुष देही रत्न पदारथ, बार बार नहिं पावै।
बालक दास कहे वैरागी, भूलां को समझावै ॥४॥

१११

दिन नीके बीते जाते हैं ॥टेर॥
सुमिरन करले राम नाम, तज विषय भोग सब और काम।
तेरे संग ना चाले इक छदाम, जो देते हैं सो पाते हैं ॥१॥
लख चौरासी भोग के आया, बड़े भाग मानस तन पाया।
त्तस पर भी नहीं करी कमाई, अन्त समय पछिताते हैं ॥२॥
कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा, किसके हो तुम कौन तुम्हारा।
किसके बल हरि नाम बिसारा, सब जीते जी के नाते हैं ॥३॥

जो तू लाग्यो विषय विलासा, मूरख फंस गयो मोह की फांसा।
क्या करता श्वासन की आशा, गये श्वास नहीं आते हैं ॥४॥
सच्चे मन से सुमिरले, बन आवे तो सुकृत करले।
साधु पुरुष की संगति करले, दास कबीरा गाते हैं ॥५॥

११२

उन घर जावो हे निन्दरिया, जिन मुख राम नाम नहीं भावे ॥टेर॥
के जावो जहां संग सहेली, या रसिया रस भोगी।
मेरा पीछा छोड़ बावरी, बन बन फिरूँ वियोगी ॥१॥
आई निन्द्रा छुटी समाधि, माया ममता घेरी।
नेम धर्म सब छूट जात हैं, जब नींद फीरे चौफेरी ॥२॥
काम क्रोध हिरदे में राखे, निन्दा करे पराई।
यह घर तीनों तुझे बताया, जाजे बिना बुलाई ॥३॥
कहे भरथरी सुनो हे निन्द्रा, यहाँ नहीं तेरा बासा।
राजपाट सब त्याग दिया है, राम मिलन की आशा ॥४॥

११३

हरी का भजन करो भड़के।
गाफिल होय नर क्या गर्बाना, काल सदा कड़के ॥टेर॥
बहुता जतन करो जीवन का, गढ़ पोल्यां जड़के।
काया काचो धागो मूरख टूट जाय तड़के ॥१॥
पाँचू घेर रखो घट भीतर मनवा से लड़के।
सूरा है सो सार सम्भाले कायार सब धड़के ॥२॥

भवसागर में नौका नरतन, आण लगी कड़वे।
सतगुरु केवट पार उतारे डूबो मती फड़के ॥३॥
कुल के संग कुशल नहीं कबहुँ भेडों ज्यूं भड़के।
'रामदास' सतगुरु समझावे, सबदां रे सड़के ॥४॥

११४

हरि से लाग्या रहो भाई, तेरी बिगड़ी बात बन जाई ॥टेर॥
रंका तार्‌यो बांका तार्‌यो, तार्‌यो सदन कसाई।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी, तारी गौतम नारी ॥१॥
दौलत दुनियां माल खजाना बछिया बैल चराई।
जब ही काल का डंका बाजे, खोज खबर नहिं पाई ॥२॥
ऐसी भक्ति करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई।
सेवा बन्दगी और अधीनता, सहज मिले रघुराई ॥३॥
यह दुनियाँ है चार दिनों की, रहो राम लिव लाइ।
कहत 'कबीर' सुनो भाइ साधो, सतगुरु बात बताइ ॥४॥

११५

जीव तू मत करना फिकरी, जीव तू मत करना फिकरी।
भाग लिखी सो हुइ रहेगी, भली-बुरी सगरी ॥टेर॥
तप करके हिरनाकुश आयो, वर पायो जबरी।
लोह लकड़ से मर्‌यो नहीं, वो मर्‌यो मौत नखरी ॥१॥
सहस्र पुत्र राजा सगर के, तप कीनो अकरी।

थारी गति ने तूही जाने, आग मिली ना लकड़ी ॥२॥

तीन लोक की माता सीता, रावण जाय हरी।
जब लक्ष्मण ने लंका घेरी, लंका गइ बिखरी ॥३॥
आठ पहर साहेब को रटना, ना करना जिकरी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, रहना बे फिकरी ॥४॥

११६

तूं सारां सेही भूंडोरे, मन लोभी तूं सारां सेही भूंडोरे।
रात दिवस वोहि कह समझाऊं, एक न मांने गूंडोरे ॥टेर॥
हूं तो कहूँ, तूं लाग भजनमें, तूं मचकोड़े मूंडोरे।
माया कारण फिरै भटकतो, हाथ घालें जाय ऊंडोरे ॥१॥
भोगां काज फिरै जगमांही, हाथलियां छूरि कूंडोरे।
ऐसा धक्का लगावै ध्यानसें, ठिके जमी जाय मूंडोरे ॥२॥
अंग आकार कछू नहिं याके, हाथ पांव बिन टूंडोरे।
एक पलकमें खलक मुलकको, खबर लावै यो डूंडोरे ॥३॥
घेरयो न घिरै द्वेष मनधारै, वैर चित्तारै ऊंडोरे।
भागां मीछै हाथ न आवै, संत भागा ले मूंडोरे ॥४॥
आशा भारती नित समझावै, लाखन मानै लूंडोरे।
जग सुपने सम असत् जाण अब, एक ब्रह्म कर ढूंडोरे ॥५॥

११७

मन तूं ऐसो नीच संगाती ॥टेर॥
निश दिन रहत जोई नीचनसंग आठ पहर दिन राती।
विषय की बात लगे अति प्यारी, हरि चर्चा न सुहाती ॥१॥

आवत जावत लग रही मन में, कुकरम रोपे छाती।
मृग तृष्णा जल छोड़ बावरे चढ़े न सुख की पांती ॥२॥
वैठ सभा में मीठे बोले, मन में राखे भाँती।
जान बूझ नर पड़े नरक में बीतत है दिन राती ॥३॥
कहा करो इन कन की खातिर तिल भर लगे न बाती।
कहत कबीर सुनों भाई साधो आवा गमन मिटाती ॥४॥

११८

मन तू निपट भयोरे सैलानी तें सन्ता सीख नहीं मानी ॥टेर॥
तन धन जन जग सम्पत्ति देखके तेरी मति बौरानी।
काम क्रोध मद लोभ मोह बस बन्यो फिरै अभिमानी ॥१॥
देख बिचार मौत नहीं छोडे राव रंक भये फानी।
कित हरिचन्द दधीचि गये कहां रह गई प्रकट कहानी ॥२॥
मनुष्य देह देवन को दुर्लभ जाचत सुरमुनि सानी।
ताकूं पायके व्यरथ गमावे, करे निपट नादानी ॥३॥
प्रभु मय जग लखि नयन सफल कर राम मन्त्र जप वानी।
दान पुण्य कर शुचि करले होय सफल जिन्दगानी ॥४॥
शरणागत पालक सुख दायक दीन बन्धु सुखदानी।
प्रभु स्वतन्त्र को आप बचावो सेवक अपनो जानी ॥५॥

११६

चित्त चंचल बहुत हमारो नाथ कैसे करूँगा भजन तुम्हारो ॥टेर॥
पाँच को मन्त्री पचीस को संगी उनसे बनो है हमारी।

भजन करू मनवा उठ भागे थिर ना रहत लिगारी ॥१॥

मनवो पड़तो कुमति के पीछे तज दियो ज्ञान ध्यान सारो।
साधु सन्त को कह्यो न माने ऐसो है धूतारो ॥२॥

या मनवा को लाज न आवे साख भरे कइ बारो।
घूंटा पीछे हाथ न आवे जैसे ढोर उजारो ॥३॥
चोरी में चौकस और परनिन्दा खाणे में हुसियारो।
हरि की भक्ति साधु की सेवा इनसे ले रह्यो टारो ॥४॥

पोथी पुराण भागवत गीता सुण सुण गयो जमारो।
कहत कबीर सुणो भाई साधो इस मन को कांई पतियारो ॥५॥

१२०

मनुवा राम सुमिरले रे।
आसी तेरे काम नाम की, बालद भर ले रे ॥टेर॥

संत कहैं जो बात भजन की, चित्त में धर ले रे।
मिनष जनम को सफल करे तो, अब ही कर ले रे ॥१॥

भवसागर से तिरणो चाहै तो, हरि को भज ले रे।
राम नाम को नाव बैठ के, पार उतर ले रे ॥२॥

खोटा खोटा करम करे तूँ, कुछ तो डर ले रे।
आगे हैं जमराज थांरी, खूब खबर ले रे ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ मोह, पांचां ने तज दे रे।

कहे पुजारी तिरणो चाहे तो, जीवत मर ले रे ॥४॥

१२१

क्यों वेक्या वेक्या फिरो मगरमस्त से,
आवेगा जम्म ले जाय जबरदस्ती से ॥टेर॥

तूं राम सुमिर ले सुकृत कर ले मूँजी
तेरी धरी रहैगी संग न चाले पूँजी

तूं क्यों करता अनरीत तुझे क्या सूजी
तूँ इस काया को छोड़ ठोड़ कर दूजी ॥
पड़ गई अगर हैं गाँठ मगर हस्ती से ॥१॥

तूँ कर आया वहाँ कवल भूल मद माया
यहाँ भूल गयो तूं देख राम की माया

माया के जाल में पड़्या पड़्या ललचाया
नहिं सुकृत किया नहिं राम नाम गुण गाया ॥
वहाँ साहिब पूछे जब बहुत तस्ती से ॥२॥

यह लहर लोभ की लख चौरासी धारा
हुए पार भक्त अरू डूबे पापी सारा।

रख दया धर्म तो होवे तेरा निसतारा
निंदा के करते चढ़े पाप सिर भारा
अब अन जल तेरा उठ चला बस्ती से ॥३॥

माया के जाल में नित होता है फरजी
कहै लछमणदास दुनिया मतलब गरजी

पद कथे दास भगवान राम की मरजी
चोल हुवे पुराण कब लगे सीवे दरजी
इस संत सभा के बीच बची मस्ती से ॥४॥

१२२

तेरे सिरपर आया केस धोला तूं लज रे।
तैं दियो जमारो खोय रामने भजरे ॥टेर॥

तूं लख चौरासी मांहि सबे फिर आयो
यह रतन चिंतामनि सार नीठ तें पायो
तूं खोवे मूढ गँवार पारख नहीं पायो
तूं पीछे ही पछताय रंग ज्यूं रोयो
यो सपने सो संसार पाप तूँ तजरे ॥१॥
छिन छिन बीती जाय खबर नहीं कोई
गिरि नदियां केरो नीर जोबन त्यूं भाई
जग अल्प दिनां के सुख स्वरूप की झांई
यो स्वारथ को संसार अंत पछताई
या जुरा मंजारी लार लगी तन तुजरे ॥२॥
कौरव अरु पांडव जोड़ करण से भाई
यहाँ बड़े बड़े महाराज हुवे जग मांही
अब कंस न दीखे कोय जरासंघ राई
जिन महारथियों के भार धरा धुजाई
दिनां चार लग रही सजावट सजरे ॥३॥
जरा पहुँची आन काल की साई
यह काया माया जान बादल की छाई।

तुम कियो न सुकृत काम उत्तम कुल आई॥

या सुणेन न देखे कोय लोभ घट छाई ।
यो जग सब चाल्यो जाय देख तूं अजरे ॥४॥
ऐसी करो पराई बात बैठ नित दूनी
थारे नही चलेगा साथ बाथ भरे सूनी ।
यूं देवे कलह लगाय बात किये जूनी
तुम राम भजो दिन रात होय क मूनी ॥
हीरा लाल मुक्ति की खान भक्तिपद भजरे ॥५॥

वैराग्य

१२३

लिवी है फकीरी फिकरन करना, ध्यान धणी का धरना वे ।
ममता मान बड़ाई त्यागो, रहो सतगुरुजी रे सरणा वे ॥टेर॥
क्या बस्ती क्या परबत जंगल, निरभय निसंक विचरणा वे ।
राजा रंक एक कर जाने, पत्थर और सुवरणा वे ॥१॥
कबहुक सहज पटंबर अम्बर, कबहुँ भूमि पर गिरना वे ।
गहो इक साचरु सील सबूरी, अजर पियाला जरणा वे ॥२॥
पर इच्छा के षट् रस भोजन, ताते क्षुधा हरणा वे ।
लूखा सूखा टूका खाकर इस विधि उदर भरना वे ॥३॥
हरदम हेत चेत घर भीतर, बाहिर भटकन मरणा वे ।
होय उदास त्याग गृह बंधन, ता संग लाग न धरणा वे ॥४॥
मात पिता सुत भाई बन्धु, मोह पासु नहीं परणा वे ।
परसराम इक राम सुमरिले, चौरासी नहिं फिरणा वे ॥५॥

१२४

मन रे निज बैरागी होना।
राजा रंक एक कर मानो, ज्यों कंकर ज्यों सोना ॥टेर॥

तज पुर बास उदासी बिचरो, मत कोई बांधो भोना।
गिरी, तरु, मड़ी मसाणां में रहिये, के कोई देवल सूना ॥१॥
भूख लगे जब भिक्षा करनी, करका करना दूना।
शीत निबारण जीरण कंथा, तापर थेगल जूना ॥२॥
आसा तृष्णा मैल निवारो, हरि भज हिरदा धोना।
जब दिलपाक दयानिधि पावो, गावे बड़े-बड़े मौना ॥३॥
तन-मन जीति प्रीति सतगुरु से, धरिये ध्यान अखौना।
रामजन कहे वैरागी, रामचरणजी का छौना ॥४॥

१२५

गोरे-गोरे गात को गुमान कहा बावरे॥
रंग तो पतंग तेरो, काल उड़ि जायगो ॥टेर॥

धूवां कैसो धन तेरो, जातहु ना लागे वेरो।
नदी के किनारे रूँख, कैसे ठहरायगो ॥१॥

मनहु को छोड़ मान, प्यारे मेरी सीख मान।
जोबन को रूप तेरो, कूकरान खायगो ॥२॥

मानुष की देही यों तो जीवत ही आवे काम।

मूआँ पीछे स्याल काग, सूकरन खायेगो ॥३॥

फूसहु की आग को, निवास घड़ी दोयहु को।
चोरन को माल, नहीं चौहटे बिकायगो ॥४॥
कहत मियाँ तानसेन, छोड़ दे माया की देन।
बँधी मुट्ठी आयो है, पसारे हाथ जायगो ॥५॥

१२६

भजन बनत नांही मनवो सैलानी ॥टेर॥
अच्छा-अच्छा भोजन चाहिए, और ठंडा पानी।
चाबने को पान चाहिये, और पीकदानी ॥१॥
सेज तो सुरंगी चाहिए, रूपवंती रानी।
पूत तो सपूत चहिए, कुल की निसानी ॥२॥
हाथी चहिये घोड़ा चहिए, तम्बू असमानी।
किला तो अटूट चहिये, तोप धूल धानी ॥३॥
बालापन बीत गयो, बीत गई जवानी।
अब तो बुढ़ापो आयो, लागी खैंचा-तानी ॥४॥
कहत मलूक दास, छोड़ दे पराई आस।
देखो भोली दुनियाँ कैसी, भरम भुलानी ॥५॥

१२७

दिल राजी मेरो राम फकीरी में ॥टेर॥
जो सुख पायो राम-भजन में, सो सुख नांहि अमीरी में ॥१॥
हाथ में कुण्डी बगल में घोटा, चारों ही धाम जागीरी में ॥२॥
भली-बुरी सब की सुन लेना, कर गुज़रान गरीबी में ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलेंगे सबूरी में ॥४॥

१२८

उड़ जायगा रे हंस अकेला, दिन दोय का दर्शन मेला ॥टेर॥
राजा भी जायगा, जोगी भी जायगा, गुरु भी जायगा चेला ॥१॥
माता पिता भाई बन्धु भी जायगा, और रुपयों का थैला ॥२॥
तन भी जायगा मन भी जायगा, तू क्यों भया है गैला ॥३॥
तुम भी जायगा तेरा भी जायगा, यह सब माया का खेला ॥४॥
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी, संग चलेगा न अधेला ॥५॥
साथी रे साथी तेरे पार उतर गये, तू क्यों रहा अकेला ॥६॥
राम नाम निष्काम रटो नर, बीती जात है वेला ॥७॥

१२९

तन धर सुखिया कोई न देख्या जो देख्या सो दुखिया वे।
उदै अस्तकी बात कहत हूँ सबका किया विवेक वे ॥टेर॥
सुक आचारज दुख के कारण, गर्भ में माया त्यागी वे।
घाटां-बाटां सब जग दुखिया, क्या गेही बैरागी वे ॥१॥
सांच कहुँ तो कोइयन माने, झूठी कही न जाई वे।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया, जिन यह सृष्टि रचाई वे ॥२॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना वे।
आसा तृष्णा सब घट व्यापे कोई महल नहीं सूना वे ॥३॥
राजा दुखिया परजा दुखिया रंक दुखी धन रीता वे।
कहत कबीर सभी जग दुखिया साधु सुखी मन जीता वे ॥४॥

१३०

भरथरी भूप भयोरे वैरागी।
विरह वियोगी बन बन डोले, सुरत सबद सूं लागी ।।टेर।।
हस्ती घोड़ा गाम परगना, कनड़े पायक आगी।
जोगी भयो देख जग जातो, नगर उजीणी त्यागी ।।१।।
हाथ सिंहासन चंवर दुलंता, राग रंग बहु रागी।
महला बैठी रंभा राणी, तासू सूरत नहीं लागी ।।२।।
सब कुछ छाड़ि भयो एक साई, राम नाम जिव लागी।
सूरवीर सैठा पग रोप्या, जरा मरण भव भागी ।।३।।
मनसा, वाचा और कर्मणा, गंध्रव सुत बड़ भागी।
कहत कबीर जूझ मन अपने, अमर भयो अणरागी ।।४।।

१३१

मनरे जाणत हैं सब भाई।
जाण पिछाण अजाण होत हैं, ताको क्या समझाई ।।टेर।।
बहुत पढ्याँ समझ्याँ क्या होवै, चल्यो न तिलभर जाई।
हुँडी बहु बिधि लिखत जुगतिकर, द्रव्य बिना नहीं पाई ।।१।।
जाणे समदम नियमासन सब, ज्ञान भक्ति उर लाई।
लोकन को विधिवत परमोदे, चित को देतनताई ।।२।।
परके तुच्छ अवगुण बहुदेखे, घर की सुधियन काई।
पर निन्दा बहु करत कहत है, अपनी करत बड़ाई ।।३।।
मुख से पंच विषय कहै खोटे, हिरदै में अतिचाई।

स्वयं त्याग वैराग दिखावे, लोग न में चतुराई ।।४।।

त्यागी देख कहै मैं त्यागी, लोभी देख लुभाई।
साधन के प्रवन्ध वहु बांधे, हृदता कछु न आई ॥५॥
चले नही चाल करै बकवादा, अन्दर बैठरु भाई।
रामदास द्याल गुरु सरणे, पूरण कहै समझाई ॥६॥

१३२

सन्तो असल त्याग यह नाहीं।
सब लग रसना खट्रस चाहत, तब लग है घर माहीं ॥टेर॥
अपणी निन्दा सुनत दुष्ट मुख, ज्ञान ध्यान विसराई।
रंचक निज स्तुति करत अज्ञजन, अती कृपालु होई जाई ॥१॥
स्त्री कुटुम्ब कुल सुत वित तजके, प्रभुता चाह लगाई।
अपना सेवक प्रबल देखकर, फूल जात मन मांई ॥२॥
ऊपर से समदम साधन पुनि, हृदय तितिक्षा नांई।
श्रवण मनन निदिध्यासन करके, वृत्ति नाही रुकाई ॥३॥
सुन्दर स्वांग देखमति भूलो, सुवरण बिन जमखाई।
पूर्ण गुरु अर्जुन सिर सो है, जिन यह मार्ग दिखाई ॥४॥

१३३

गोपीचन्द

[माँ मैणावति को रोती हुई देख गोपीचन्द
रोने का कारण पूछ रहा है।]

नीर भरयो ऐ थांरे नैण में मैणावति माता।
बादल वरसे रे कंचन महल में गोपीचंद लड़का ॥टेर॥
क्यों तू माता आखरीी ऐ! किस की बुझे रूयास।

जो कोई कहवे जीभ कटाऊँ करूं दुश्मन को नाश ऐ ॥१॥

ना मैं वेटा रुणमणि रे, ना मैं रहूँ उदास ।
रुत पलटी बादल चढ्या रे, अब बरसन की आस रे ॥२॥
ना बादल ना बिजुली ऐ ! ना कोई बाजे वाव ।
थारे मन चिन्ता घणी ऐ ! म्हाने सांची खोल बताय ऐ ॥३॥
साच कहूं तो जग हँसे रे, झूठ कहे पत जाय ।
जहाज पड़ी दरियाव में रे, अधबिच गोता खाय रे ॥४॥
जहाज पड़ी दरियाव में ऐ, कर दूं परली पार ।
मार हटाऊँ दुश्मन को ऐ ! ले नंगी तलवार ऐ ॥५॥
म्यांन धरो तलवार में रे, धरो जमीं पर ढाल ।
काया नगर सूनो पड़यो रे, अपनो बिरद संभाल रे ॥६॥
मेरा बिरद बसे मन तेरे जो कोई आज्ञा पाऊँ ।
बचन चूक फिरूँ नहीं पीछो, तुरत ही हुकम उठाऊँ ऐ ॥७॥
मुझे भरोसा पुत्र तुम्हारा तुम हो आग्याकार ।
राज पाट स्वपने की माया, सब झूठा संसार रे ॥८॥

१३४

[इस पर गोपीचन्द माँ से प्रार्थना करता है]

मने राज करन दे जोगी मत कर ऐ माँ मैणावति ।
गोपीचन्द लड़का जोगी हो जा रे चेला नाथ को ॥टेर॥
बारा बरस की ऊमर माता, मैं क्या जानूं जोग ।
चरचा करे मूलक के मांहीं, हंसे सहर का लोग ऐ ॥१॥
मेरा बचन फिरे नहीं पीछा, यह पुरुषों का बाक ।
तेरी सूरत तेरे बाप की रे, जल बल हो गई खाक रे ॥२॥

तेरा बचन फिरे नहीं पीछा, जा घर पूत सपूत।
दो जुग राज करन दे माता, फिर जोगी अवधूत ऐ ॥३॥
पाव पलक का नहीं भरोसा करे काल की बात।
क्या जाने क्या होवसी रे, दिन ऊगे परभात रे ॥४॥
दिन ऊगे दांतन करूँ ऐ, नित को देऊँ दान।
षट् दर्सण को भाव रखूँ, विप्र बधाऊँ मान ऐ ॥५॥
दान दिये फल होवसी रे, धन-दौलत अरु माया।
असल फकीरी लेले बेटा, अमर हो जावे काया रे ॥६॥
काया अमर करूँ इक छिन में, कितीयक लागे वार।
प्रथम परण्या पदमणी ऐ, विलखे राजकुमार ऐ ॥७॥
तिरिया जात जगत में झूठी, सुन रे गोपीचन्द।
जन्म-मरण से हो जा न्यारा, कूटे चौरासी फन्द रे ॥८॥
कटे चौरासी फन्द जु मेरा, जा में निपजे सार।
सत्तर लाख फोजदल प्यादा, ऊभा करे पुकार ऐ ॥९॥
करे पुकार कोई नहीं तेरा, अपने-अपने काज।
मामा तेरा देख भरथरी, तज्यो उजीणी राज रे ॥१०॥
तजी उजीणी भरथरी ऐ, आयो गोरखनाथ।
दो जुग राज कियो पृथ्वी पर, फिर गये गुरु के साथ ॥११॥
गुरु देवन का देव है रे, धरो उसी का ध्यान।
आप तिरे फिर तुझे तिरावे, गावे वेद पुरान रे ॥१२॥
भँवर पड़े भवसागर माहीं, जा में नीर अपार।

विषम घाट अरु नाव पुरानी, किस विधि उतरूँ पार ऐ ॥१३॥

चेत्या सो तो चढ गया रे गाफिल खाई मार।
सत्य की नाव धर्म का वेड़ा जीतो जम का द्वार रे ॥१४॥
जीत करो हरि नाम की रे, माता के मन धीर।
पहुँचा सोई उबरिया रे, राजा रंक फकीर रे ॥१५॥

१३५

[माँ की आज्ञा से गोपीचन्द साधू हो जाता है और फिर 'माता' कह करके अपने महलों से रानियों से भिक्षा माँगता है। फिर अपनी वहिन चन्द्रावली के पास जाकर भिक्षा माँग रहा है।]

सुन बहिन सयानी भिक्षा घालोनी ऊभो बारणे ॥टेर॥
गोपीचन्द बीरा जोगी हुयो रे कांई कारने ॥टेर॥

कहाँ से लीनी सैली सींगी, कहाँ फड़ाया कान।
बारा बरस की ऊमर तेरी, तू लड़का नादान रे ॥१॥

जनम दियौ मैणावती ऐ, मैं किस विधि करूँ पुकार।
मूँड मुँडायो महल में ऐ मने कियो गुरु के लार ऐ ॥२॥

मरजो माँ मैणावती रे, तुझे बतायो ज्ञान।
दूजा मरजो सतगुरु थारा, फाड़या छुरी से कान रे ॥३॥

कान फड़ाया मुद्रा डाली, कर कर भगवां भेष।
माता गुरु ने दोष नहीं है, लिख्या विधाता रा लेख ऐ ॥४॥
क्या विधाता लिख गई रे, संगति का उपदेश।
सुहर बंगालो सभी डुबोयो, कर कर भगवां भेष रे ॥५॥

भगवां में भगवान् बसे ऐ, गुरु देवन के देव।
आप तिरे और मुझे तिरावे, करूँ उसीकी सेव ऐ ॥६॥
तेरे गुरु के आग लगाऊँ, उलटी दीनी सीख।
राज छोड़ कर भयो मसाणी, घर-घर माँगे भीख रे ॥७॥
माँगी भीख बारने तेरे, दिवी गुरु ने गाल।
फिर नहीं आऊ द्वारे, तेरे, उठे बदन में झाल ऐ ॥८॥

१३६

परिशिष्ट

वैष्णव जन तो तैने कहिये, जो पीर पराई जाणे रे ॥
पर दुखे उपकार करे तोइ, मन अभिमान न आणे रे ॥टेर॥
सकल लोकमां सहुना वन्दे, निन्दा न करे केनी रे।
वाच, काछ, मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥१॥
समदृष्टि ते तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे ॥२॥
मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमाँ रे।
राम नामसुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमाँ रे ॥३॥
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निर्वार्या रे।
भणें नरसैयों तेनुं दरसण करतां, कुल इकोतेर तार्या रे ॥४॥

१३७

राम बिन जिवड़ो क्यां सूं लागै अँधेरी आवै आँख्यां आगे।
जद स्यूं राम गयो बन तबस्यूँ राम निकल गयो सागे ।।टेर।।
हिवड़ै मां स्यूं हूक उठत है, सांस सांस के सागै।
पूत बिना म्हांरो पेट बलै है, हाय ! कालजो फाटै ।।१।।
म्हारो मोबी मोड़ जगत रो, पण रावण में आगै।
महाबली अबला ने बांध्यो, दो बचनां रे धागै ।।२।।
पण में जामण बो है फरजन, म्हारी काया दाभै।
रोय धोय अब बिथा सुणाऊँ, किण किणारे आगै ।।३।।
भाँति भाँति पकवान जीमतो, फल तरकार्यां सागै।
आज खोड़ में म्हांरो रामू, भूखो तिस्यो भागै ।।४।।
फूल पाँखड़ियाँ पर पोढणियो, लौटे कांटा सागै।
सक्खर नींद सोवणियो बलो, सारी रातां जागै ।।५।।
माँ कौशल्या राम राम कहि, उचक उचक कर भागै।
सुण जामणरी व्यथा महल में, प्रलय लाय सी लागै ।।६।।
लाल "कन्हैया" जठे राम है, सब सुख बठै बिराजै।
राम गयो आराम कठे है, पुर मसाण ज्यूं लागै ।।७।।

१३८

वो घर सतगुरु क्यों नो बताओ जिण घरसूं जिया आया वे।
काया छाड़ चले जब हंसा कहो नी कहां जा समाया वे ।।टेर।।
मैं मेरी ममता के कारण बारम्बार ठगाया वे।
समझ न पड़ी ज्ञान गुरु गम की तीनें फिर भटकाया वे ।।१।।

रज बिरज दोऊ नहीं होता करम न होती काया वे।
ब्रह्म विष्णु महेश न होता आदि न होती माया वे ॥२॥
चाँद न सूर दिसत्र नहीं रजनी, जहाँ जाय मठ छाया वे।
सुरति सुहागण पाव, पलौटे पीव आंपणा पाया वे ॥३॥
मेरी प्रीति पिया सूं लागी उलट निरंजन ध्याया वे।
कहत कबीर सुणो भाई साधो, परे ही परे बताया वे ॥४॥

१३६

कैसो खेल रच्यो मेरे दाता, जित देखूँ उत तू ही तूं।
कैसी भूल जगत में डारी, साबित करणी कर रह्यो तूं ॥टेर॥
नर नारी में एक ही कहिए, दोय जगत में दर्शे तूं।
बालक होय रोवण ने लाग्यो, माता बन पुचकारो तूं ॥१॥
कीड़ी में छोटो बन बैठ्यो, हाथी में ही मोटो तूं।
होय मगन मस्ती में डोले, महावत बन कर बैठ्यो तूं ॥२॥
राजघरां राजा बन बैठ्यो, भिखयारां में मँगतो तूं।
होय झगड़ालू झगड़वा लाग्यो फौजदार फौजां में तूं ॥३॥
देवल में देवता बन बैठ्यो, पूजा में पुजारी तूं।
चोरी करे जब बाजे चोरटो, खोज करन में खोजी तूं ॥४॥
राम ही करता राम हरे भरता, सारो खेल रचायो तूं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उलट खोज कर पायो तूं ॥५॥

१४०

नेम की जान बनी भारी, देखन कूं आये नर नारी ॥टेर॥
अनन्ता घोड़ा और हाथी, मिनख की गिनती नहीं आती।
ऊँट पर ध्वजा फहराती, धमक से धरती थहराती॥
समंद विजयजो का लाडला, नेम कुंवर वाको नाम।
राजुलदे न आथा परणबा, उग्रसेन के गाम॥
बाज रहे बाजा इकसारी ॥१॥
कसुमल बागा अति भारी, कोर गोटन की छवि न्यारी।
कलंगी सोई शुभकारी, माल गल मोतियन की धारी॥
काना कुंडल जग मगे, शीश सेहरो जान।
कहां लग थांरी करूँ ओपमा, सोहे इन्द्र समान॥
करी जब चलने की त्यारी ॥२॥
झरोखां राजुलदे आई, जान देखत ही हरषाई।
... ...
उग्रसेन हलकारिया मन में किया विचार।
पशुजीव सब किया इकट्ठा, बाड़ा दिया भरवाय॥
हुई सब भोजन की त्यारी ॥३॥
नेम जब तोरण पर आया, पशु जिव सारा गरलाय।
नेम यह बचनजु फरमाया, पशु तुम काहे कू लाया॥
इनको भोजन होवसी, जान वास्ते आज।
इतनो बात सुनी नेम जीं छोड़्यो सारो राज॥
भाव से चढ़ गये गिरनारी ॥४॥

पिछे से राजुलदे धाई, हाथ मत पकड़ो मोरी माई।
तू कहाँ जावे मेरी जाई, और बर देऊँ मुकलाई॥
म्हारे तो बर एक ही हो गये नेम कुंवार।
और कछु बर मैं नहीं जानूं, परणों नेम कुंवार॥
दीक्षा जब राजुलदे धारी॥५॥
सहेली सब ही समझावे, दाय राजुल के नहीं आवे।
जगत मोहिं झूठो दरसावे मेरे मन नेम कुंवर भावे॥
तोड़्या कांकर डोरड़ा तोड़्या नोसर हार।
काजल टीकी पान सुपारी, तज दियो सब सिणगार॥
सहेल्याँ विलख रही सारी॥६॥
तज्या है सोलह शृंगारा, रतन-जटित आभूषण सारा।
लगत मोही माय बाप खारा, छोड़कर चाली निरधारा॥
माता पिता परिवार ने तजतां लगी न बार।
वेगी जाय मिली पिय अपने, जाय चढ़ी गिरनार॥
मूरती छोडी माँ प्यारी॥७॥

१४१

(तर्ज—सुनो सुनो दुनिया वालो बापू की यह अमर कहानी)

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निःस्पृह हो उपदेश दिया॥

बुद्ध, बीर, जिन, हरि, हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद, जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं ॥२॥
रहे सदा सत्संग इन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी ना कहा करूँ।
पर धन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती का, कभी न ईर्षा भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ ॥४॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे, उरसे करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
सम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो आवे ॥५॥
गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके मन में सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर में आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
अनेक वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पथ डिगने पावे॥७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दु:ख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे॥
रहे अडोल अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़ तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहन शीलता दिखलावे॥८॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोइ कभी ना घबरावे।
बैर भाव अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे॥९॥
ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर पर हुआ करे।
धर्मी होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोगमरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे॥१०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर हो रहा करें।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करें॥
बन कर 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें॥११॥

१४२

ॐ जय जगदीश हरे।

भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे, ॐ जय० ॥टेर॥

जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मनका।

सुख संपति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॐ जय० ॥१॥

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।

तुम बिन और न दूजा आश करूँ जिसकी ॥२॥

तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी।

पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम, सबके स्वामी ॥३॥

तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्त्ता।

मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्त्ता ॥४॥

तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति।

किस विधि मिलूँ दयामय तुम से मैं कुमति ॥५॥

दीनबन्धु दुखहर्त्ता तुम रक्षक मेरे।

करुणा हस्त बढावो द्वार पड़ा तेरे ॥६॥

विषय विकार मिटाओ पाप हरो, देवा।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा ॥७॥

१४३

आरती

आरती कीजे श्याम लला की, श्याम लला की मेरे राम लला की ।।टेर।।

भक्ति का दीपक प्रेम की बाती, आरती करती हूं दिन राती।
बलि बलिहारी मेरे दोनों लला की ।।१।।

माखन मिसरी का भोग लगाऊँ खेल खिलौने से लाड़ लड़ाऊँ।
बलि बलिहारी मेरे दोनों लला की ।।२।।

दूध मलाई खाकर लाल गोदी में आ जाओ मेरे लाला।
मैं बलिहारी तुम दोनों लला की ।।३।।

अपनी मैया को लाला भूल न जाना, व्याकुल हो मन धीर बँधाना।
मैं बलिहारी तुम दोनों लला की ।।४।।

इति शुभम्

बोलो राम-श्याम की जय !